संचारी

×		०		२		३		४	
नि	नि	प	—	नि	प	प	म	प	प
ब	न्यो	हे	—	भे	—	द	अ	—	ति
म	प	नि	नि	सां	—	सां	नि	प	प
उ	त	तें	गं	गा	—	की	धा	—	र
म	प	नि	प	नि	प	म	रे	—	सा
ध	सी	—	—	ध	र	नी	प	—	र
ऩि	सा	रे	म	प	म	रे	रे	सा	—
उ	—	ज्जव	—	ल	—	ब	र	न	—

"आभोग" अन्तरानुसार।

राग सारंग–ताल धमार

श्रीलक्ष्मनगृह महामंगल भयो, प्रगटे श्रीवल्लभ पूरनकाम ।
माधव मास कृष्ण पक्ष सुभ लग्न, उदित एकादसी दूसरो जाम ॥१॥
मंगल कलस चोक मोतिनके, विविध विचित्र चित्र बने धाम ।
गावति मंगल गीत मानीनि, नखसिख सुभग कामसी वाम ॥२॥
मिट्यौ तिमिर दुखद्वंद जगतको भोर भयो मानो मिट गइ यामा ।
मानिकचंदप्रभु सदा बिराजो ओइ बसो श्रीगोकुलगाम ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
नि	—	—	सां	—	सां	सां	नि	सां	—	नि	—	प	—
श्री	—	—	ल	—	क्ष्म	—	न	—	—	गृ	—	ह	—

नि	नि	प	म	प	नि	–	सां	नि	–	सां	–	सां	–
म	हा	–	मं	–	–	–	ग	ल	–	भ	–	यो	–
रें	रें	–	रें	–	सां	–	सां	–	–	नि	–	प	–
प्र	ग	–	टे	–	श्री	–	व	–	–	ल्ल	–	भ	–
नि	–	–	प	म	प	म	रे	म	–	प	नि	म	प
पू	–	–	र	–	न	–	का	–	–	म	–	–	–

अन्तरा

×					२		०			३			
रें	–	–	रें	–	रें	–	रें	नि	–	सां	–	सां	–
मा	–	–	ध	–	व	–	मा	–	–	स	–	कृ	–
रें	मं	–	रें	–	सां	–	रें	नि	–	सां	–	सां	–
व्या	–	–	प	–	क्ष	–	सु	भ	–	ल	–	ग्न	–
नि	नि	–	सां	–	सां	रें	नि	सां	–	नि	–	प	–
उ	दि	–	त	–	–	–	ए	का	–	द	–	सी	–
नि	–	–	प	–	म	प	नि	–	–	नि	प	म	प
दू	–	–	स	–	रो	–	जा	–	–	म	–	–	–

संचारी

×					२		०			३			
निं	–	–	नि	–	नि	–	सां	सां	–	सां	–	सां	रें
मं	–	–	ग	–	ल	–	क	ल	–	स	–	चो	–

नि	सां	–	नि	–	म	प	नि	नि	–	सां	–	–	–
क	–	–	मो	–	–	–	ति	न	–	के	–	–	–
रें	रें	–	सां	–	नि	सां	नि	–	–	प	–	–	–
बि	बि	–	ध	–	बि	चि	–	–	–	त्र	–	–	–
प	नि	–	प	–	प	म	रे	म	–	प	–	–	–
चि	त्र	–	ब	–	ने	–	धा	–	–	म	–	–	–

"आभोग" अन्तरानुसार ।

(सारंग राग के अन्य पदोंकी स्वरलिपि के लिए "संगीतसुबोधिनी" एवं "संगीतकीर्तनपद्धति" ग्रन्थ को देखिये)

चलती

निनि	–नि	सांसां	सांसां	नि–	मप	निनि	सा–
मिट्यो	–ति	मिर	दुख	द्वं–	दज	गत	को–
रें–	रेंरें	सां–	निप	निनि	पम	रे–	सां–
भो–	रभ	यो–	मानो	मिट	गइ	या–	म–
मं–	मंमं	रेंरें	सांसां	रेंरें	–सां	रेंनि	सां–
मा–	निक	चंद	प्रभु	सदा	–बि	रा–	जो–
नि–	निनि	सां–	निप	नि–	मप	नि–	सां–
आ–	इब	सो–	श्री–	गो–	कुल	गा–	म–

राग मधमाध सारंग

'मधमाध–सारंग' के अन्य नाम मधमाद, मध्यमादि, मधु–माधवी, मध्यमावती भी प्राप्त होते हैं। यह प्राचीन राग है। 'संगीतरत्नाकर' जैसे प्राचीन ग्रन्थ में पं. शार्ंगदेव ने इस राम की व्यास्या में 'मध्यमादिर्म-ग्रहांशा × ×' इत्यादि उल्लेख किया है।

'मध्यमादि' का स्वरूप–ध्यान 'दर्पणकार' ने इस प्रकार कहा है।

"पत्या सहासं परिरभ्य कामं सचुम्बितास्या कमलायताक्षी।
स्वर्णच्छविः कुंकमलिकुंप्तदेहा सा मध्यमादिः कथिता मुनीन्द्रैः॥

'रागतरंगिणी' ग्रन्थ में कहा हैं कि :—

"बागीश्वरीकानरयोर्योगात् स्याद् मधुमाधवी॥"

किन्तु मधुमाधबी का थाट या लक्षण का कोई उल्लेख किया नहीं है। 'हृदयकौतुक' ग्रन्थ में 'मेघ' राग का थाट कहा है, तदनुसार इस राग के 'सा रे ग म प नि नि सां' स्वर अर्थात् खमाज थाट होता है।

'पं. व्यंकटमखी' ने मध्यमावती का श्री–मेल में समावेश किया है, किन्तु इस राग का वर्णन किया नहीं है। 'संगीतसारामृत' ग्रन्थ में भी श्री मेल (अपना काफी मेल) कहा गया है।

यह मध्यमादि राग श्री(काफी)मेल से उत्पन्न होता है। गान्धार तथा धैवत स्वर वर्ज्य हैं, जाति औडुव है, जो सायंकाल के समय गाया जाता है।

'सारामृत' के आधार पर ही 'रागलक्षण'कारने स्पष्ट कहा है :—

"अधिकारी खरहरप्रियमेलात् सुनामकः।
आरोहेऽप्यवरोहे च गधवर्ज तथौडुबम्॥
सा रे म प नि सां। सां नि प म रे सा" [पृष्ठ २८]

'पं. अहोवल' ने 'मध्यमादि' का वर्णन निम्न मतलब किया है ।

'मध्यमादि' राग में गांधार और धैवत दोनों स्वर वर्ज्य होते हैं, । जाति औडुव है । मध्यम स्वर ग्रह है तथा मध्यग आदि में मी है, अतएव इसका नाम 'मध्यमादि' है । इसमें (भरतादि) मुनीश्वरों ने ऋषभ मध्यम निषाद को अंश स्वर बताया है । उदाहरण :—

म प नि सां, रें मं रें सां, नि सां निप, मप, निप, मपमरे, सा । नि नि प नि सा, मरे, सा, निसा ।

[सं. पारिजात, श्लोक-३८०]

पं. 'श्रीनिवास' ने भी 'रागतत्त्वाविबोध' में इसका ही समर्थन किया है :

राजासाहब टागोर कहते हैं कि : "मतांतर की दृष्टि से इस राग को षाड़व जाति का भी माना जाता है । पं. भावभट्ट के मत से तो यह राग औड़व ही है, परंतु प्रचार में षाड़व-रूप का गायन भी दिखाई देता है ।" इस मत के सम्बन्ध में पं. भातखण्डे लिखते हैं कि "बंगाल में राग का षाडव प्रकार कदाचित् प्रचार में होना संभवित है, किन्तु विवादी स्वर के नाते से रागरक्तिवर्धन के लिये अवरोह में धैवत का प्रयोग व्यवहार में होता होगा । राजासाहेब टागोर ने इस राग का विस्तार निम्न प्रकार किया है ।

निसा, रेम, पनिनि, प, निनिसां, सांनिमप, निसां निप, मपधपमरे, सारे निसां रेप, मरेसा ।"[1]

---

[1] विशेष माहिति के लिए देखिये :- हिं. सं. पद्धति-भाग ४]

पं. आदितरामजी ने भी 'मधुमाध' रागिनी के वर्णन में कहा है कि :

"निषाद कोमल और बाकीके सब सारंगके सुर हैं. निषाद पर न्यास है. औडुव जाति है. निषाद व मध्यम प्रधान सुर हैं। गांधार धैवत वर्ज हैं, 'मधुमाध' का रूप और वृन्दावनी सारंग का रूप है। ग्रीष्म में वीर व सिंगार से दुपहर को गाई जाय।"

[संगीतादित्य, पृष्ठ ८८ + ९४]

हवेली-संगीत के कुछ कीर्तनसंग्रहों में मधमाध सारंग का उल्लेख दृष्टिपथ होता है, इतना ही नहीं, सारंग राग के अन्तर्गत लिखे हुए कतिपय कीर्तनों की बंदिशों के आधार से भी कहा जा सकता है कि यह राग अष्टछाप-घराने का परम्परागत राग है।

हमारे मतानुसार प्राचीन परम्परा में अवरोह धैवत स्वर के प्रयोग वाले जो पद सारंग राग के शीर्षक में समाविष्ट किये गये हैं वहाँ अधिकतर होली धमार के पदो में दिखाई देते हैं। उनको मधमाद सारंग कहने का रिवाज सम्भवित था अतः वृन्दावनी सारंग के अवरोह में धैवत का प्रयोग कहने से मधमाद सारंग भिन्न हो जाता है वही अष्टछापीय परम्परा का मधमाध सारंग होना सुमुचित है। किन्तु यहाँ व्यवहार में गाये जाने वाला मधमाद सारंग का उदाहरण दिया गया हैं।

सारंग राग का गानसमय सामान्यतः मध्याहन का सर्वसंमत है, जो दिन के तृतीय प्रहर के आरम्भ का समय माना जाता है। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में हवेली-संगीत के नियमानुसार तृतीय प्रहर तक सारंग राग के कुछ प्रकारों का गान किया जाता है। जिस प्रकार "भैरव" राग का ठीक गान-समय अरुणोदय है, किन्तु भैरव एवं इनके अन्य प्रकारों का गानसमय दिन का प्रथम प्रहर माना जाता है उसी प्रकार सारंग राग का समय सभी ऋतुओंमें 'मध्याह्न' ठीक ही है, किन्तु ग्रीष्म ऋतु में उनकी समय मर्यादा तृतीय प्रहर के अन्त तक मानी जायगी। अनएव मधमाध-सारंग को सम्प्रदाय में साय-सेवा

प्रणाली के आरम्भ के उत्थापन तथा भोग के दर्शन में अधिकतर गाने की प्रथा सशास्त्रीय कही जायगी।

'संगीतसारामृत' ग्रन्थ में तो 'मधमाध' का समय सायंकाल का कहा है[1] परन्तु उसका अर्थ हमारी दृष्टि से सायंकाल. दिन के चतुर्थ प्रहर के अन्त का भाग होने से चतुर्थ प्रहर का समय समझा जाय तो इस राग का समय तृतीय प्रहर के अन्त एवं चतुर्थ प्रहर के आरम्भ-समय तक की मर्यादा ग्रीष्मऋतु के लिए सुसंगत कहना अनुचित नहीं है।

'मध्यमादि-सारंग' की संक्षिप्त माहिती :

१. थाट—काफी से उत्पन्न होने वाला सारंगप्रकार है।
२. गान्धार—धैवत स्वर वर्ज्य है।
३. जाति—औडव—औडव है।
४. वादी—ऋषभ और संवादी पंचम है।
५. गान-समय दुपहर का माना जाता है।
६. पूर्वांग में 'प री' और उत्तरांग में 'नि प' संगति रागबोधक है।
७. **आरोहावरोहस्वरूप** :— निसा, रे, मप, निसां। सां, नि पमरे, सा
८. **पकड़ स्वर** :— निप, मपरे, सा, निसा, रे, मप।
९. **स्वरविस्तार** :—

(अ) निसा, रे, मरे, पमरे, निसारेम, पनिपमरे, सा।

(ब) निसारे, पमरे, नि नि प, मप, रे परे, निसा।

(क) सा, निसा, पनि, प नि सा, निसारे, म, प, रे, निसा।

---

[1] गधलोपादौडुबोऽयं सायंकाले। [पृष्ठ १२]

(ड) मप, नि निप, निमप, सां, निप, मप, निपमरे, निसारे,

मपनिनिपमरे, पमरे, परे, मरे, सा ।

(इ) मपनि, सां, निसां, निसांरें, मंरें, पंरें, सां, निप, मरे परे, सा ।

[उदाहरण-१ जमुनातट खसखाने की रावटी का निम्न पद जो राजभोग अथवा भोगसमय के दर्शन में गाया जाता है]

स्थायी— जमुनातट नवनिंकुंज द्रुमदल नव पोहोपपुंज,
तहाँ रची नागरवर रावटी उसीरकी ।
अन्तरा— कुंकुम घनसार घोर पंकजदल बोर बोर,
चरचित चहुँ ओर अवनी पंकज पाटीरकी ॥१॥
संचारी— सोभित तन गौर स्थाम, सुखद सहज कुंज धाम,
परसत सीतल सुगंध, मंद गति समीरकी ।
आभोग— 'नंददास' पिय प्यारी निरखि सखी ललिता ओर,
स्रवनन धुनि सुनि किंकिनी मंजीरकी ॥२॥

उपर्युक्त पद की स्वरलिपि

राग—मधमाध सारंग

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प											
नि	नि	प	—	म	प	नि	प	प	म	रे	सा
ज	मु	ना	—	त	ट	न	व	नि	कुं	—	ज
नि	सा	रे	रे	म	प	नि	प	म	रे	—	सा
द्रु	म	द	ल	न	व	पो	हो	प	पुं	—	ज

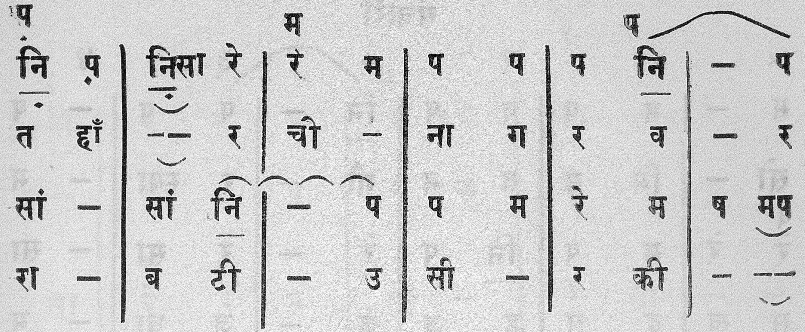
प म प
नि प | निसा रे | रे म | प प | प नि | — प
त हाँ | — — र | ची — | ना ग | र व | — र
सां — | सां नि | — प | प म | रे म | प मप
रा — | ब टी | — उ | सी — | र की | — —

अन्तरा

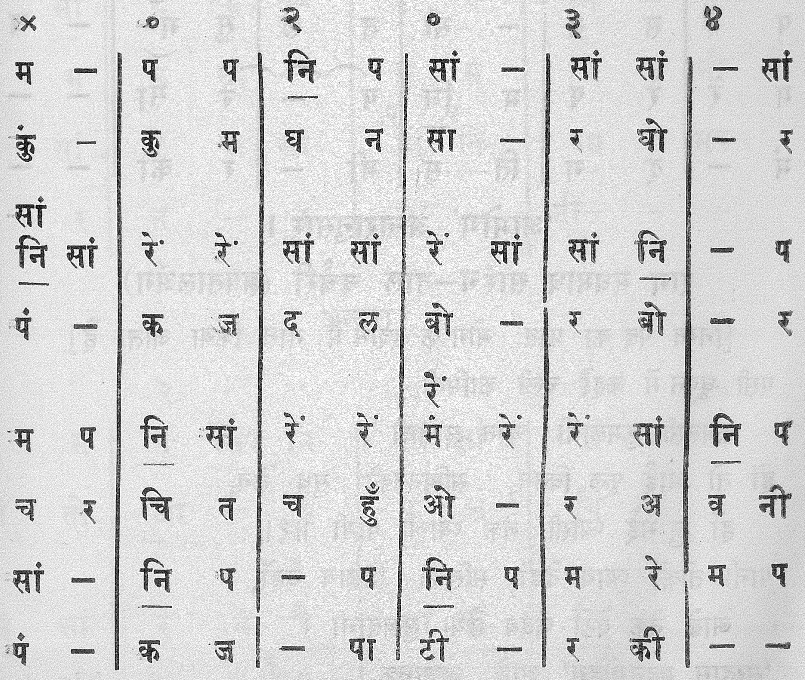
× ० २ ० ३ ४
म — | प प | नि प | सां — | सां सां | — सां
कुं — | कु म | घ न | सा — | र घो | — र
सां
नि सां | रें रें | सां सां | रें सां | सां नि | — प
पं — | क ज | द ल | बो — | र बो | — र
रें
म प | नि सां | रें रें | मं रें | रें सां | नि प
च र | चि त | च हुँ | ओ — | र अ | व नी
सां — | नि प | — प | नि प | म रे | म प
पं — | क ज | — पा | टी — | र की | — —

संचारी

×	—	०		२		०		३		४	
म	—	म	प	प	प	नि̱	—	प	प	—	प
सो	—	भि	त	त	न	गौ	—	र	स्या	—	म
$^{\text{प}}$रे	रे	म	प	नि̱	प	रे	—	रे	सा	—	सा
सु	ख	द	स	ह	ज	कुं	—	ज	धा	—	म
नि̱̣	प̣	सांनि̱	रे	—	प	रे	म	प	नि̱ध	नि̱	प
प	र	स	त	—	सी	त	ल	सु	गं—	—	ध
म	रे	रे	प	म	नि̱	प	—	रे	सा	—	—
मं	—	द	ग	ति	स	मी	—	र	की	—	—

'आभोग' अन्तरानुसार ।

राग मधमाध सारंग—ताल चर्चरी (झपतालअंग)

[निम्न पद का प्रायः भोग के दर्शन में गान किया जाता है]

एसी धूपन में कहाँ चली कामिनी,
कमलसी कुमलानी चरन लुभानी ।
हों तो आई फूल बिनन, सखियनकों सुध लेन,
हों जु भई प्यासी, नेक प्याओ पानी ॥१॥
पानी तोकों प्याय देहों, सखिकों मिलाय देहों,
आछे नेक बेठो कदंब छैया सुखदानी ।
'सूरदास मदनमोहन' आये अचानक,
रीझ–रीझ रहे दोउ कंठ लपटानी ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
प	प				म				
नि	नि	प	म	प	रे	रे	सा	—	रे
ए	—	सी	—	धू	प	न	में	—	क
सा		म							
नि	सा	रे	रे	प	रे	—	रे	सा	—
हाँ	—	च	ली	—	का	—	मि	नी	—
नि	सा	रे	म	—	प	प	नि	—	प
क	म	ल	सी	-	कु	म	ला	—	नी
					प	प			
सां	सां	रें	—	सां	नि	नि	पम	रे	मप
च	र	न	—	लु	भा	—	नी—	—	—

अन्तरा

×		२			०		३		
म	म	प	निप	नि	सां	सां	सां	सां	सां
हों	तो	आ	—	ई	फू	ल	बि	न	न
							प		
नि	सां	रें	मं	रें	सां	सां	नि	—	प
स	खि	य	न	की	सु	ध	ले	—	न

म	प	रें	रें	रें	सां	—	सां	नि	प
हों	—	जु	—	भ	ई	—	प्या	—	सी
म	प	सां	—	सां	$^{\text{प}}$नि	$^{\text{प}}$नि	पम	रे	मप
ने	क	प्या	—	ओ	पा	—	नी	—	—

संचारी

×		२			०		३		
म	रे	म	प	प	$^{\text{प}}$नि	प	प	—	प
पा	नी	तो	—	कों	प्या	य	दे	—	हों
म	प	रे	—	म	रे	रे	सा	—	सा
स	खि	कों	—	मि	ला	य	दे	—	हां
नि̣	सा	रे	रे	सा	नि̣	प̣	सा	रे	सा
आ	छे	ने	क	बे	ठो	—	क	दं	ब
म	प	नि	प	प	रे	—	सा	—	—
है	—	यां	सु	ख	दा	—	नी	—	—

'आभोग' अन्तरानुसार।

राग मधमाध सारंग—ताल चौताल

सूर आयो सिर पर छाया आई पायन तर
पंछी सब झूक रहे देख छांह गहिरी।
धंधीजन धंध छांड रहरी धूपके लिये,
पशुपंछी जीवजंतु चीरियां चूप रहिरी ॥२॥

व्रज के सुकुमार लोग देदे किंवार सोये,
उपवन की ब्यार तामें पोढे पिय हे प्यारी ।
सूर अलबेली चलि काहे कों डरात हे
माहकी मधरात जेसे जेठकी दुपहरी ।।२।।

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	नि	प	म	प	प	रे	रे	—	सा	—	सा
सू	—	र	आ	—	यो	सि	र	—	प	—	र
नि	सा	सा	रे	—	प	प	म	रे	रे	सा	सा
छा	—	या	आ	—	ई	पा	य	न	त	—	र
सा	—	रे	म	प	प	नि	प	म	रे	म	प
पं	—	छी	—	स	ब	झू	क	—	र	—	हे
सां	रें	सां	नि	—	प	नि	प	म	रे	म	प
दे	—	ख	छाँ	—	ह	ग	हि	—	री	—	—

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	म	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	—	सां
धं	—	धी	ज	—	न	धं	—	ध	छां	—	इ
नि	सां	—	रें	मं	रें	सां	सां	सां	नि	—	प
र	हि	—	री	—	धू	प	न	के	लि	—	ये

म	प	—	नि	—	प	रे	—	रे	म	प	प
प	शु	—	पं	—	छी	जी	—	व्र	जं	—	तु
रें	रें	सां	नि	प	प	नि	प	म	रे	म	प
ची	रि	यां	—	चू	प	र	हि	—	री	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	प	—	म	प	रे	—	रे	म	रे	सा
व्र	ज	के	—	सु	कु	मा	—	र	लो	—	ग
रे	—	सा	नि	सा	रे	म	रे	सा	नि	सा —	सा प़
ढे	—	—	ढे	—	कि	बा	—	र	सो	—	ये
सा	सा	रे	रे	प	प	रे	—	रे	म	प	प
उ	प	ब	न	की	—	ब्या	—	र	ता	—	मैं
नि	—	प	म	प	प	रे	—	—	सा	—	सा
पो	—	ढे	पि	—	य	हे	—	—	प्या	—	री

"आभोग" अन्तरानुसार।

राग मधमाध सारंग—ताल चौताल

अपने अपने घरके किंवार देकें,
सोय रहे एसे समें आली क्यों न रहिरी ।।
सूर आयो सिर पर छाया आई पायन तर
बाटके बटाउ धूप देखिकें झूकेरी ।।१।।

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	म	रे	सा	रे	सा	नि	सा	—	सा	—	सा
अ	प	ने	अ	प	ने	ध	र	—	के	—	किं
सा	—	सा	रे	—	रे	व	—	म	प	म	सा
वा	—	र	दे	—	के	सो	—	य	र	—	हे
रे	—	सा	नि	सा	रे	म	रे	म	प	—	नि
ए	—	—	से	—	स	में	—	—	आ	—	ली
सां	—	—	नि	—	प	प	म	रे	म	प	नि
क्यों	—	—	न	—	र	हि	—	—	री	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	म	म	—	म	प	—	नि	सां	—	सां
सू	—	र	आ	—	यो	सि	—	र	प	—	र
सां	सां	—	रें	—	रेंमं	रें	सां	सां	सां	नि	प
छा	या	—	आ	—	ई—	पा	य	न	त	—	र
म	—	म	रे	म	म	म	प	प	नि	म	प
बा	—	ट	के	—	ब	टा	—	उ	धू	—	प
सां	—	सां	नि	—	प	प	म	रे	म	प	नि
दे	—	खि	कें	—	झू	के	—	—	री	—	—

राग सामंत सारंग

इस राग को कोई सामन्त, सामत, सावन्त तथा सावंत सारंग भी कहते हैं। ग्रन्थों में अधिकतर 'सामंत' नाम से उल्लेख प्राप्त होते हैं। 'संगीतरत्नाकर' में इस राग का उल्लेख नहीं हे, किन्तु तत्पश्चात् के उत्तरीय एवं दाक्षिणात्य ग्रन्थों मे इस राग के विधान दृष्टिगत होते हैं। उत्तरीय पद्धति में प्रथम पं. लोचन के 'रागतरंगिणी' ग्रन्थ में इस राग का उल्लेख प्राप्त होता है। उन्होंने वृन्दावनी, बडहंस और सामंत को सारंग के ही प्रकार माने हैं।

पं. लोंचन के सारंग संस्थान(मेंल) के स्वर अपनी आधुनिक पद्धति में "सा रे म म॑ प नि॒ नि सां" इस प्रकार होते हैं।

पं. हृदयनारायण देव नें सामंत को औडुव जाति का सारंग मेल का राग कहा है। ३

'रागतरंगिणी' में वताये हुए सारंग संस्थान के गान्धार व धैवत यानि अपने शुद्ध मध्यम और कोमल निषाद स्वर 'हृदयकौतुक' और 'हृदयप्रकाश' ग्रन्थ में वर्जित किये हुए हैं। अतः उनके मतानुसार "सा रे म॑ प नि" स्वर होते हैं। ४ किन्तु इन स्वरों में 'नूर–सारंग' जैसा कुछ रूप प्रगट होता है।

---

१. सारंगस्वरसंस्थाने प्रथमा परमंजरी।
वृन्दावनी तथा ज्ञेया सामन्तो बऽहंसकः॥

२. एवं सति च गान्धारः शुद्धमध्यमतां व्रजेत्।
धश्चशुद्धनिषादः स्यात् सारंगो जायते तदा॥

३. सामन्तो हि तदौडुवः।

४. हिं०सं० प० भा० ४ [मराठी–पृ. ४३३]

उपर्युक्त स्वरो मे॑ से 'इमन' के म नि स्वर हटा कर उन्होंने सामन्त का निम्न प्रकार कहा हैं ।

"मनित्यागादौडुवेषु सामन्तः सादिरिष्यते ।
सारेगपधसां धपगरिसा"

अर्थात् आधुनिक सा री म प नि सां । सारंग राग के ही स्वर बताये गये हैं । [५]

पं. अहोबला नें सामन्त का रुप इस प्रकार कहा है : [१]

रिस्तु तीव्रतरः प्रोक्तस्तीव्रगान्धारशोभिते ।
सामन्तसंज्ञके रागे न्यासोद्ग्रहांशषड्जके ॥४५१॥

अर्थात् सामन्त नामक राग में तीव्रतर ऋषभ कहा है और तीव्र-गान्धार द्वारा यह शोभित होता है (एक ही स्वर के दोनों नाम) तथा ग्रह न्यास अंश तीनों षड्ज पर ही (संवादी पंचम) हैं । इति सामन्तः । तृतीयप्रहरोत्तरम् ।

अहोबल के स्वर "सा ग ग म प ध नि सां । होते हैं अहोबल में सामन्त स्वतन्त्र रूप में माना है । हृदय पंडित ने भी मात्र "सामन्त" संज्ञा दी है, परन्तु उन्होंने सारंग मेल कहकर सारंग प्रकारजन्य माना है । आज समाज में भी सामन्त-सारंग' नाम सर्वत्र प्रसिद्ध है । पं. श्रीनिवास नें भी अहोबल के अनुसार ही सामन्त का विधान क्या है ।

सामन्त के स्वरूप के उपर्युक्त ग्रन्थोक्त विधानों में एकवाक्यता दिखाई नहीं देती ।

पं. भातखंन्डेजी नें इस राग के विषय में संख्याबधि ग्रन्थमतो का विवेचन किया हैं, तथापि प्रचार के स्वरूप को पूर्वोक्त किंसी भी

---

५. ,, ,, [मराठी—पृ. ४३४]

१, संगीत पारिजात (हिंदी हाथरस—प्रकाशन—पृ. १७९)

ग्रन्थ का समर्थन प्राप्त न होने पर 'लक्ष्यसंगीत' के आधार पर निम्न प्रकार अपना मत प्रदर्शित किया है ।२

सामंत सारंग में मल्हार व सारंग ये दोनों रागों का मिश्रण है । इस राग में निदान गांधार स्वर का अभाव है किन्तु धैवत सबंधी मतभेद है । किन्तु मैंने जो प्रकार सीखा है उसमें धैवत अवश्य है । जो अवरोह में 'निधप' इस प्रकार लेने का गुरुनें कहा हैं । कोई-कोई गायकों के गायन में धैवत का 'धनिप' इस प्रकार प्रयोग भी करते हैं ।

अवरोह में एवं उत्तरांग में धैवत दुर्बल होते हुए भी इनके संयोग से राग-भिन्नता के साथ सारंग की छाया नष्ट होनी न चाहिए, इस प्रकार धैवत का प्रयोग होना चाहिए ।"

उपर्युक्त चर्चा के सारांश में यह कहा जा सकता है कि वैष्णव मन्दिरों की अपेक्षा राज्याश्रित गायक-वादकों में इस राग का प्रचार बहुत कम होगा । अप्रचलित रागों में इस राग की गणना होती रही है । पं. भातखण्डेजी नें भी अपने गुरु से सीखी हुई चीज के आधार पर इस राग का रूप प्रगट किया है । उनकी क्रमिक ७ वीं पुस्तक में सामन्त सारंग की केवल एक ही चीज दी गई है अतः इस राग का समाज में प्रचार और प्रसार मर्यादित रूप में दिखाई देता है ।

परन्तु पुष्टि. वैष्णव-मन्दिरों में इस राग की परम्परा अष्टछाप के समय से चालू रही हैं । इस राग के पद प्रायः अष्टछाप के गायकों में से सूर गोविन्दस्वामी कृष्णदास और छीतस्वामी के प्राप्त होते हैं। जो अष्टछापकी स्थापना के बाद उन्हों ने अपने उत्तर जीवन में श्रीजी को यह राग निवेदित किया हुआ माना जायगा । पश्चात् तानसेन चतुरबिहारी और व्रजपतिजी आदि महानुभावों ने इस राग में अनेक पद गाये

---

२. हिं. सं. प. भा-४ मराठी पृष्ठ-४४३,४४४

हुए दिखाई देते हैं, जो आज पर्यंत वसंत और ग्रीष्म ऋतु में मंदिरों (हवेलीओं) में गाने की प्रथा चालु है। होरी-खेल के दिनों में इस राग की बहुत कुछ धमारें गाई जाती हैं। जिनसें संगीताचार्य गोविन्दस्वामी के "प्यारी तें मोहन को मन हर्यो। तथा छीतस्वामी की 'सुरंगी होरी खेले सांवरो' यह धमार सुप्रसिद्ध हैं।

वसंत ऋतु के अतिरिक्त ग्रीष्म ऋतु में गाये जाने वाले खसखाने के तथा दुपहरी के पदों में यह राग के पद प्राप्त होते है इन पदों में से उदाहरण के लिये[1] 'अनत न जैये अहोपिय' यह कीर्तन की स्वर-लिपि विवरण सहित यहां दे जा रही है।

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता हैं। वादी स्वर ऋषभ और संबादी पंचम है। गांधार स्वर वर्ज्य है। केवला अवरोह में मध्यम से ऋषभ की मींड में इनका आभास होता हैं। सोरठ और सारंग का मिलाप से यह राग में दिखाई देता है। धैवत-स्वर का अवरोह में नि ध प, ध नि प, इस प्रकार प्रयोग किया जाता हैं।

आरोहावरोह :—सा, रे, मप, निसां। रेंसां निप, मप नि धप, मरे, सा।

स्वविस्तार :—(१) सा, निसा, रेमप, निधप मप, निप, मनिधप, मरे, पमरे, रेसा।

(२) सा, रेमप, धप, निधप, मनिधप, मरे, सा, निपधप, मरे, पमरे, सा.

---

[1] इस पद को आजकल कोई गौड-सारंग में गाते हैं, किन्तु गौड-सारंग के पद-रचना में 'धन', 'दामिनि' या 'मेह' शव्द प्रयोग अनिवार्य और आवश्यक रूप में माना जाता है। अतः यह सामंत सारंग का ही पद है देखिए संगीत कीर्तन मंजरी पृ. ८२

(३) सारे, मपनिसां, रेंसां, $\underline{\text{नि}}$धप, मपधपमरे, निधपमरे, धपमरे, पमरे, मरे, रेसा.

(४) मप, नि, सां निसां, रें रें, सां, $\underline{\text{नि}}$प, मप$\underline{\text{नि}}$धम, मप, मरे, मपमरे, सा ।

रवसखाने का पद.

अनत न जैये अहो पिय, रहिए मेरेही महल ।
जोई जोई कहोगे, सोई सोई करुंगी टहल ॥१॥
सय्या सामग्री बसन आभूषण, सबबिधि कर राखोंगी पहल ।
चतुर विहारी गिरिधारी पियाकी, रावरी यही सहल ॥२॥

राग—सामंत—सारंग ताल—आडाचौताला मात्रा—१४

									प	म	रे	नि̣	सा
									अ	न	त	—	न
×		२		०		३		०		४		०	
म	—	रे	—	सा	—	म	—	रे	—	प	—	प	—
जै	—	ये	—	—	—	अ	—	हो	—	पि	—	य	—
म	$\underline{\text{नि}}$	ध	—	प	—	म	—	प	—	नि	—	सां	—
र	हि	ये	—	—	—	मे	—	रे	—	ही	—	म	—
नि	सां	रें	$\underline{\text{नि}}$	ध	प	म	रे	—	ध$\underline{\text{नि}}$	प	म	रे	सा
ह	—	—	—	ल	—	—	—	—	अ—	न	त	—	न

अंतरा

×		२		०		३		०		४		०	
म	—	प	—	म	प	नि	—	—	—	सां	—	सां	निसां
जो	—	ई	—	—	—	जो	—	—	—	ई	—	क	—
रें	—	नि	—	सां	—	नि	सां	रें	—	मं	—	रें	—
हो	—	गे	—	—	—	सो	—	ई	—	सो	—	ई	—
रें	—	सां	—	—	—	नि	—	ध	—	म	प	नि	सां
क	—	रू	—	—	—	गी	—	—	—	—	—	ट	—
रें	सां	रें	नि	ध	प	म	रे	—	धनि	प	म	रे	सा
ह	—	—	—	ल	—	—	—	—	अ—	न	त	—	न

संचारी

×		२		०		३		०		४		०	
म	—	म	—	म	—	प	—	—	—	नि	—	म	प
स	—	ख्या	—	सा	—	म	—	—	—	श्री	—	—	—
म	प	नि	—	नि	—	सां	—	सां	—	सां	नि	म	प
ब	स	न	—	आ	—	भू	—	ख	—	न	—	स	ब
ध	—	ध	—	नि	—	प	—	प	—	म	—	रे	—
वि	—	धि	—	क	—	र	—	रा	—	खौं	—	गी	—
रे म	—	म	—	—	—	रे	—	—	—	सा	—	—	—
प	—	ह	—	—	—	—	—	—	—	ल	—	—	—

आभोग

×		२		०		३		०		४		०	
म	प	नि	—	—	नि	सां	—	सां	—	रें	—	रें	—
च	तु	र	—	बि	—	हा	—	री	—	गि	—	रि	—
नि	सां	रें	—	मं	—	रें	—	सां	—	रें	नि	सां	—
धा	—	री	—	पि	—	या	—	—	—	जु	—	का	—
नि	—	ध	नि	ध	प	म	—	प	—	नि	—	सां	—
रा	—	व	—	री	—	य	—	ही	—	—	—	म	—
रें	सां	रें	नि	ध	प	म	रे	—	धनि	प	म	रे	सा
ह	—	—	—	ल	—	—	—	—	अ—	न	त	—	न

राग गौड–सारंग

ग्रन्थो में इस राग का शंकराभरण थाट में समावेश किया हुआ दिखाई देता हैं। इस राग के उत्तरांग में कुछ बिलावल की छाया होने की शक्यता से यह मान्यता को विसंगत कहना ठीक नहीं है। शंकराभरण यानि बिलावल थाट से उत्पन्न होने वाले रागों का गान–समय दिन का प्रथम प्रहर ही उचित और शास्त्रोक्त है, तथापि गौड–सारंग गाने का समय मध्याह ही माना गया है। यह कृत्य केवल अपवाद ही कहा जायेगा।

इस रागमें निषाद स्वर का गौणत्व है, तथापि कुछ पंडित लोग

(निषाद वर्जित) षाडव जाति भी मानते हैं। पुष्टिसम्प्रदाय के पं. आदित्यरामजी ने गौडसारंग के विवेचन में षाडव–भेद बताया है तदुपरान्त निषाद मिलाकर संपूर्ण जाति के प्रचार की मान्यता का स्वीकार भी किया है। * शास्त्र में इस राग को सम्पूर्ण कहा है× तथा मेघ– मल्हार और गौड–सारंग की उत्पत्ति का थाट एक ही माना गया है। + पुष्टिसम्प्रदाय की सेवाप्रणाली में 'गौड–सारंग' राग के पदों को ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा से (राजभोग के समय) रथयात्रा (आषाढ शुक्ल २) तक ही गाने की प्रथा आज भी प्रचलित हैं। रथयात्रा से वर्षाऋतु का प्रारम्भ माना गया है और उसी रोज से मल्हार और मल्हार के प्रकारों में पदगान किये जाते हैं। अतः अष्टछाप-घराने के मतानुसार 'गौड–सारंग' राग को वर्षाऋतु के आगमन का संधि–वाचक राग कहा जायगा।

---

* संगीतसाहित्य. पृष्ठ ८८ इस प्रकार उल्लेख प्राप्त होता है। षाडव भेद है। निषाद नाद है। शुद्ध म व तीव्र म ऐसे दो म कहे हैं। शुद्ध मध्यम पें ठहरना और मूर्छना लगाना वो दुरस्त है. और दूसरे सव शुद्ध स्वर है। गांधारसे मध्यम पहुंच कर पंचम तक मींड की राह से जाना वो खूनी देता है। निषाद मिला के संपूरन भी मानते हैं।

× 'मादिर्गवांशः संपूर्णः गौडसारंग उच्याते। भावार्थ–गौड–सारंग सम्पूर्ण है और गान्धार अथवा प अंश है'। [हृदय–प्रकाश]

+ मेघरागस्य संस्थाने मेघो मल्लार एव च।
गौडसारंगनाटौच रागो बेलावली तथा॥

[रागतरंगिणी]

इस राग में किंचित् कल्याण का स्वरूप दिखाई देता है तथापि तीव्र मध्यम पर राग का कोई अपलम्बन नहीं है, किन्तु पं. भारतखण्डेजी ने मध्यम वाले हमीर और केदार राग के माफिक इस राग का भी कल्याण थाट में समावेश किया है।

इस राग में दो मध्यम का प्रयोग होता है, तीव मध्यम केवल पंचम की संगति से ही लिया जाता हैं। यदि तीव्र मध्यम वर्ज्य किया जाय तो भी इस राग का स्वरूप पहिचानने में कोई बाधा नहीं होती, परन्तु मपधमप, मग, रेगरेमग, प, रेसा। इस प्रकार तीव मध्यम का प्रयोग करने से राग का वैचित्र्य बढता है।

गौड-सारंग का संक्षिप्त विवरण

१. यह राग कल्याण **थाट** से ऊत्पन्न होता है।
२. **स्वर**–दोनों मध्यम वादी के सब शुद्ध स्वर।
३. **जाति**–सम्पूर्ण–सम्पूर्ण।
३. **वादी**–गान्धार, संवादी धैवत स्वर।
५. हमीर और केदार के माफिक गान्धार व निषाद स्वर का वक्रत्व है। चलान भी वक्र है।
६. **गा**–समय दुपहर का सर्वसम्भत है।
७. तीव मध्यम का प्रयोग आरोह में क्षम्य है।
८. **पकड स्वर**–सा, गरेमग, परेसा.
९. **आरोहावरोह स्वरूप**–

सा, गरेमग पमधप निधसां ।

सांधनिप, धमपग, मरे, प, रेसा.

राग गौड-सारग, ताल-चौताल

भलेई मेरे आये हो पिय, टीक दुपहर की बिरियाँ ।
सुभ दिन सुभ नच्छत्र, सुभ मुहूरत, सुभ पल छिन सुभ घरियाँ ॥१॥

भयो है आनंद फंद मिटयो बिरहदु:खद्वंद, चंदन घसि अंग लेपान,
ओर पाँयन परियाँ । 'तानसेन' के प्रभु मया कीनी मो पर,
सूकी बेल कीनी हरियाँ ॥२॥

स्थायी

						प	रे	सा	रे	सा	गरे
						भ	ले	ई	मे	—	रे—
×		०		२		०		३		४	
ग म	ग	—	गरे	म	ग	प	—	रे	सा	रे	सा
आ	—	—	ये—	—	—	हो	—	—	पि	—	य
सा	—	मग	प	—	प	ध	प	म	प	धनि	सां
टी	—	——	क	—	दु	प	ह	—	र	की—	—
ध	प	म	गरे	म	ग,	प	रे	सा	रे	सा	गरे
बि	रि	—	यां—	—	—,	भ	ले	ई	मे	—	रे—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	व	—	सां	—	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां
सु	भ	—	दि	—	न	सु	भ	न	च्छ	—	त्र
नि											
सां	—	प	सां	—	रें	सां	नि	ध	प	म	ग
सु	—	—	भ	—	मु	हू	—	—	र	—	त
प	—	प	ध	म॑	प	सां	रें	सां	ध	धनि	ब
सु	—	भ	प	—	ल	छि	न	—	सु	—	भ
ध	प	म	गरे	म	ग	—	प	रे	सारे	सा	गरे
घ	रि	—	यां	—	—	—	भ	ले	ई—	मे	रे—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	ग	रे	म	ग	प	प	—	ध	प	—	प
भ	यो	—	हे	—	आ	नं	—	द	कं	—	द
ग						प					
म	ग	प	पम॑	ध	प	सां	प	म	गरे	म	ग
मि	टचो	—	वि—	र	ह	दुः	ख	—	द्वं—	—	द
प	म॑प	ध	प	म	ग	म	—	रे	सा	रे	सा
चं	द	न	घ	—	सि	अं	—	ग	ले	प	न

सा	—	ग	रे	म	ग	प	रे	—	सा	सा	—
ओ	—	र	पाँ	य	न	—	प	—	रि	याँ	—

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	सां	—	सां	सां	—	—	रें	सां	—
ता	—	न	से	—	न	के	—	—	प्र	भु	—
सां	प	—	सां	गं	रें	मं	गं	पं	रें	—	सां
तु	म	—	ब	—	हु	ना	—	—	य—	—	क
प	—	—	सां	—	रें	सां	—	—	ध	धनि	प
सू	—	—	की	—	बे	ल	—	—	की	—	नी
ध	प	म	गरे	म	ग,	प	रे	सा	रे	सा	सा
ह	रि	—	याँ	—	—,	भ	ले	ई	मे	—	रे

राग गौड–सारंग–ताल धमार

हों नहिं जान्यो री माई बहु नायक को नेह ।
मास असाढकी घटा घुमड आई, रिमझिम बरखत मेह ॥१॥
काहु त्रियन संग नेह जोरि के, काहुके आवत उठि गेह ।
'धोंधी'के प्रभु रसबस फर लीने, बडभागिन जुवती ऐह ॥२॥

स्थायी

ग			
म	रे	सारे	सा
में	—	न—	हिं

×					२		०			३			
म						ध							
ग	रे	म	ग	—	प	प	रे	—	सा	सा	गरे	म	ग
जा	—	—	न्यो	—	री	—	मा	—	ई	ब	हु—	ना	—
										ग			
प	प	—	निध	सां	धप	म॑प	गम	—	ग,	म	रे	सारे	सा
य	क	—	को—	—	ने—	——	——	—	ह,	हों	—	नी—	के

अन्तरा

×					२		०			३			
प	प	सां	सां	—	रें	सां	सां	ध	प	म	गरे	म	ग
मा	स	अ	सा	—	ढ	की	घ	टा	घु	म	ड—	आ	ई
										ग			
सासा	म	ग	प	पम॑	ध	प	गरे	म	ग,	म	रे	सारे	सा
रिम	झि	म	ब	र	ख	त	मे—	—	ह,	हों	—	नी—	के

संचारी

×					२		०			३			
म	म	मग	प	प	प	प	ध	प	म॑प	मप	म॑प	म	ग
का	हु	त्रि—	य	न	सं	ग	ने	ह	जो—	——	रि—	कें	—
ग													
म	रे	सा	रे	सा	म	ग	प	रे	—	सा	रे	सा	—
का	हु	के	आ	—	व	त	उ	ठि	—	गे	—	ह	—

आभोग

×					२		०	गं		३			
प	प	सां	सां	सां	रें	सां	गंरें	मं	रें	सां	धप	म	प
धों	धी	के	प्र	भु	र	स	बस	क	र,	ली	ने—	ब	उ
धप	म	ग	प	पम॑	ध	प	रे	—	सा,	$\overset{ग}{\text{म}}$	रे	सारे	सा
भा—	गि	न	जु	व—	ती	—	ते	—	ह	हों	—	न—	हिं

राग नूर-सारंग

भारतीय संगीत के घरानों में इस राग की परम्परा केवल अष्टछाप-(हवेली) संगीत के घराने में ही अविच्छिन्न रूप में दिखाई देती है। जोकि नूर-सारंग में गाये जाने वाले पद सम्प्रदाय के पदों की पुरानी पोथियों में 'सारंग' शीर्षक के अन्तर्गत्त ही पाये जाते हैं। परन्तु नूर-सारंग ही नहीं, सारंग के अन्य परम्परागत सभी प्रकार केवल 'सारंग' शीर्षक में ही प्राप्त होते हैं, तथापि पश्चात् लिखे हुए लगभग से सवासो वर्षों के कुछ संग्रहों में 'मधमाध', 'सावन्त,' गौडसारंग, और 'नूरसारंग' के उल्लेख दृष्टिगत होते हैं। नूर को कोई लहर सारंग भी कहते हैं। नूर-सारंग का स्वरूप समझने के लिये प्रथम प्रचलित 'शुद्ध सारंग' के रूप को देखना आवश्यक है। पं. भातिखण्डेजी ने 'नूर-सारंग' के विषय में किया हुआ उल्लेख और स्वर-स्वरूप के लिये देखिये (हिं. सं. प. पृ. ४०६-८)।

पं. भातखण्डेजी ने अपने समय के मुस्लिम घरानों के गायक लोगों की प्रचारदृष्टि के आधार पर निर्णय किया हुआ मालूम होता है। पं. भातखण्डेजी ने शुद्ध सारंग के सम्बन्ध में जो शास्त्रीय उल्लेख किया है,

उसमें 'सारंग, सारंगताट, सारंगी' नामादि प्राप्त होते हैं । किन्तु ग्रन्थों में, शुद्ध-सारंग' राग नाम दिखाई देता नहीं है । अतः शुद्ध-सारंग नाम एवं उसका स्वरूप तथा 'नूर-सारंग' के स्वरादि का जो विवरण किया है, वह उनके समय के गायकों से सुने हुए और कहे हुए वर्णन पर निर्धारित दिखाई देता है, किन्तु हवेली-संगीत की परम्परानुसार के नूर-सारंग का विचरण निम्न-प्रकार है :—

नूर-सारंग में मन्द्र और मध्य सप्तक का ही विस्तार होता है । कोमल निषाद और कोमल गान्धार का प्रयोग अवरोह में ही होता हैं । तथा शुद्ध गान्धार का प्रयोग अवरोह में मींड के स्वरूप में किया जाता है । आरोह में क्वचित् तीव्र मध्यम का विवादी के नाम से प्रयोग किया जा सकता हैं । इस प्रकार हमारे नूर-सारंग का स्वरूप आधुनिक अन्य गायकों की मान्यता से स्वतन्त्र है, यही नहीं, एक महत्त्व की विशिष्टता यह है कि यह राग 'मध्यम-ग्राम' से भी गाया जाता है ।

थाट काफी वादी-रे संवादी-पंचम रूप

आरोह—ऩिसा, रे, मप, निप, निसां ।

अवरोह—सां, निप, मगरे, गरे, ऩिसारे ।

---

१. मध्यम स्वर को षड्ज मानने पर सात स्वर क्रमानुसार ४-७-११ १३-१७-२० और २२ श्रुति पर स्थित होंगे । इस प्रकार रे और ग में चार श्रुति का अन्तर है, जो तीव्र गान्धार का तथा ध और नि में दो श्रुति का है जो कोमल निषाद का सूचक है । अतः प्राचीन मध्यम ग्राम लगभग खमाज थाट के समान माना जायगा । इस राग में भी कोमल निषाद और तीव्र गान्धार का उपयोग किया जाता है । अतः उठाव की दृष्टि से 'मध्यम ग्राम' समुचित कहा जायगा । अधिक विवरण 'ग्राम' की चर्चा में देखिए ।

पकड-स्वरुव—

सा, रेसा, निप, मप, निसा, रे, गरे, मगरे, सारे, निसारे,

उदाहरणार्थ—परमानन्ददासजी का निम्न पद स्वरलिपिसहित निम्न प्रकार दिया गया है ।

राग नूर–सारंग–ताल तीनताल, मात्रा–८

चलों सखी कुंज गोपाल ।
जहां तेरी सोंह मदनमोहन पे चलि ले जाऊं तहां ॥१॥
नीले कमल मंद मलयानिल तरु कदंबकी छांह ।
तहां निवास कियो नंदनंदन चित तेरे तन मांह ॥२॥

स्थायी

		सानि	सारे	सानि	—म	पनि	सारे	सा
		चलो	—स	खीकुं	—ज	गोपा	—ल	ज
×	२	०	३	×	२	०	३	
					रे			
म रे	— —	निसा	— —	— —	मरे	—मप	— —	—
हाँ	— —	— —	— —	— —	ते—	—रीसों	— —	ह

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	मप	निप	मम	गारे	रेगरे	सानि	सारे	सा
म	दन	मोह	नपे	— —	चलिले	—जा	—ऊं	त
		रे	सा					
म रे	— —	मरे	सानि	सा—	निम	पनि	सारे	सा
हां	— —	चलो	—स	खी—	कुंज	गोपा	—ल	ज

संचारी

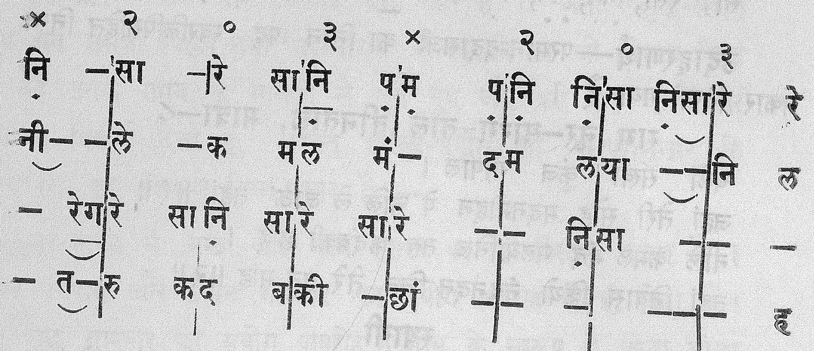
× २ ० ३ × २ ० ३
नि —सा —रे सानि पम पनि निसा निसारे रे
नी— —ले —क मल मं— दम लया — —नि ल
— रेगरे सानि सारे सारे — — निसा — — —
— त—रु कद बकी —छां — — — — — — ह

आभोग

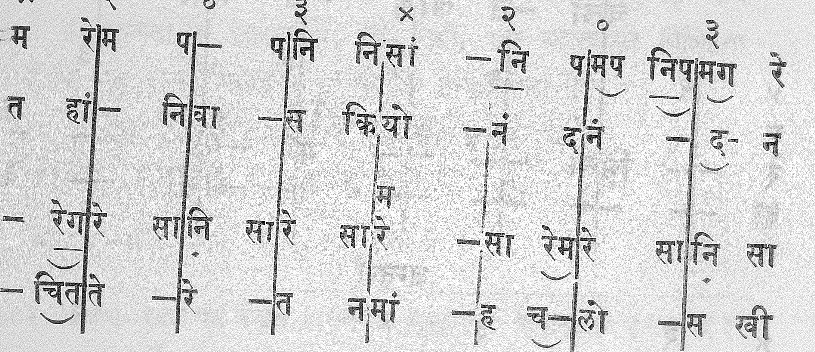
× २ ० ३ × २ ० ३
म रेम प— पनि निसां —नि पमप निपमग रे
त हां— निवा —स कियो —नं दनं —द- न
म
— रेगरे सानि सारे सारे —सा रेमरे सानि सा
—चितते —रे —त नमां —ह च—लो —स खी

राग-नूर—सारंग ताल त्रिताल

आजु दधि कंचन मोल लई ।
जा दधिकों सनकादिक इच्छत सो ग्वालन बांटि दई ॥१॥
दधिके पलटें दुलरी दीनी जसुमति खबर भई ।
'सूरदास'प्रभु कुंवर लाडिलो, बरवट प्रीति नई ॥२॥

स्थायी—अन्तरा

२				०				३				×			
रे	रेम	रे	सा	नि	प	म	प	नि	—	सा	नि़सां	रे	रेग	रे	नि
आ	ज--	द	धि	कं	—	च	न	मो	—	ल	ल—	ई	—	—	—
सा	—	—	—	रे	—	म	म	प	—	प	प	नि	म	म	प
—	—	—	—	जा	—	द	धि	कों	—	स	न	का	—	दि	क
म	रे	सानि़	सा	रे	रेग	रे	सा	नि़	सा	गे	प	म	रे	—	सा
इ	—	च्छ—	त	सो	ग्वा—	ल	न	बां	—	टि	द	ई	—	—	—

स्थायी

२				०				३				×			
नि़	नि़	नि़	—	सा	सा	सा	—	रे	रेम	रे	सा	नि़सा	रेसा	नि़	प़
द	धि	के	—	प	ल	टें	—	दु	ल—	री	—	दी—	——	नी	—
नि़	सा	रे	म	प	प	म	प	नि	प	म	रे	रे	नि़	सा	—
ज	सु	म	ति	ख	ब	र	भ	ई	—	—	—	—	—	—	—

‘आभोग’ अन्तरानुसार।

राग—बडहंस सारंग

यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। सम्प्रदाय में आजकल प्रचार में अप्रसिद्ध है, किन्तु प्राचीन हस्तलिखित कीर्तनसंग्रहो में यह नाम प्राप्त होता है अतः यह राग पुर्व समयमें प्रचार में होगा। वृन्दावनी से मिलता झूलता इस राग का वादी स्वर रिषभ और संवादी पंचम हैं। ग-ध वर्जित होने से इस राग की जाति औडब है। मुक्त मध्यम के कारण यह राग वृन्दावनी

सारंगसे भिन्न दिखाई देता है । गानसमय मध्याह :होने से सम्प्रदाय में उष्णकाल में राजभोग समय गाया जाता है ।

आरोहावरोह :– सा, रेम, पम, निप, निसां । सां निप, म, रे, सा ।

राग बडहंस सारंग, ताल त्रिताल (८ मात्रा)

चलो किनि देखन कुंजकुटी ।
मदनगोपाल जहां मध्यनायक, मन्मथ फोज लुटी ॥१॥
सुरतसमरमें लरत सखीकी मुक्तामाल तुटी ।
उरजवेंजु कंचुकी चुरकुट भई, कटिपट ग्रंथि छुटी ॥२॥
रसिकसिरोमनि हेंजु नंदसुत दीनी अधर घुटी ।
'परमानंद' गोविंद ग्वालिनिकी नीकी जोट जुटी ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	४	
सांनि	सांनि	पम	रेसा	रेम	——	—म	मम	प
दे—	—ख	नकुं	—ज	कुटी	——	—च	लौकि	न

अंतरा

×	२		०	३	×	२	०	३	
म	प	प	पनि	पम	पनि	सांसां	सांसांनि	रेंसां	सां
म	द	न	गोपा	—ल	जहाँ	—म	ध्यना—	—य	क
नि	सां	रें	मंरें	—सां	सांसांनि	सांनि	पम	मप	प
म	न	म	थफो	—ज	कुटी—	——	—च	लोकि	न

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	मम	मम	पप	—म	मप	निप	मप	—
सु	रत	सम	रमें	—ल	रत	सखी	—की	—
म	निनि	पम	पमरे	सारेम	——	—रे	निसा	—
मु	—क्ता	—मा	—ल—	तु—टी	——	——	——	—

राग मधमाध सारंग (प्राचीन अंग)–ताल धमार

स्यामा नकबेसर अति वनी छबि कविपे बरनी न जाइ हो ।
सोने सरस सुनार गढी हे, हीरा लाल जराइ हो ॥१॥

आधे अधर बिराजत मोती, लाल रहे ललचाइ ।
ताकी सोभा अति बाढी हे, भयो गुंजको सुभाइ हो ॥२॥

तनसुख सारी रातो लहँगा क्यों न स्याम मन भाइ हो ।
सोभा हितहरिवंस सांवरे, चितें चली मुसिकाइ हो ॥३॥

स्थायी

३				×					२		०		
म	प	नि	सां	रें	—	—	सां	—	सां	—	नि	ध	प
हो	—	स्या	—	मा	—	—	न	—	क	—	बे	—	—
म	रे	म	प	नि	ध	प	प	—	म	—	रे	—	—
स	—	र	—	अ	—	—	ति	—	ब	—	नी	—	—

सा	—	सा	—	म	म	—	म	—	रे	—	रे	रे	—
छ	—	बि	—	क	वि	—	पे	—	—	—	ब	र	—
म	—	प	—	ध	—	—	नि̲	ध	नि̲	ध	प	—	—
नी	—	न	—	जा	—	—	—	—	—	—	इ	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
म	प	—	नि	—	नि	—	सां	सां	—	सां	—	नि	सां
सो	—	—	ने	—	—	—	स	र	—	स	—	सु	—
रें	मं	रें	सां	—	सां	—	रें	नि	—	सां	—	—	—
ना	—	—	र	—	ग	—	ढी	—	—	हे	—	—	—
नि	सां	—	रें	—	मं	—	रें	—	—	सां	—	सां	रें
ही	—	—	रा	—	—	—	ला	—	—	ल	—	ज	—
सां	नि	—	सां	—	रें	—	नि̲	ध	प	म	प	नि	सां
रा	—	—	—	—	—	—	इ	—	—	हो	—	स्या	—

संचारी

×					२		०			३			
म	—	—	म	—	रे	—	रे	रे	—	म	—	प	—
आ	—	—	धे	—	—	—	अ	ध	—	र	—	बि	—
ध	—	—	नि̲	—	प	—	म	प	म	रे	—	सा	—
रा	—	—	ज	—	त	—	मो	—	—	ती	—	—	—
म	—	—	म	—	म	—	रे	—	—	म	—	प	—
ला	—	—	ल	—	र	—	हे	—	—	ल	—	ल	—

ध – – नि ध	नि ध	प – –	म – प –
चा – – – –	– –	इ – –	– – – –

रागमाला, ताल चौताल

राग सारंगसे आरम्भ होनेवाली यह रागमाला हमारे पूर्व प्रकाशन 'अष्टछाप—भक्तिसंगीत !' ग्रन्थ—१, खण्ड—१, पृष्ट १८३ पर देखिये।

स्थायी (सारंग)

							म	प	निसां	रें	नि
							सा	–	रं–	–	ग
×		०		२		०		३		४	
सां	–	–	नि	–	प	नि	–	प	म	रे	सा
ने	–	–	नी	–	–	री	–	–	तू	–	–
नि़	सा	रे	–	म	–	प	प	म	प	नि	सां
कां	–	हे	–	को	–	कि	यो	–	ए	–	तो
रें	–	नि	सां	प	नि	प	म	प	निसां	रें	नि
मा	–	–	–	न	–	–	सा	–	रं–	–	ग

अन्तरा (गौरी, कल्याण)

×		०		२		०		३		४	
म॑	ध	–	नि	–	नि	रें	रें	–	सां	–	सां
गौ	–	–	री	–	ग	हे	रु	–	छां	–	डि

निसां	रें	सां	नि	ध	प	ध	मं	ग	रे	रे	सा
मि–	ल	–	ला	–	लें	–	म	–	न	क्र	म
नि	सां	सां	प	म॑	ध	सां	–	ध	प	–	प
ब	च	न	या	–	तैं	हो	–	–	त	–	क
ध	मप	प	रे	–	सा	–	म	प	निसां	रें	नि
ल्या	–	–	–	–	न	–	सा	–	रें–	–	ग

संचारी (नट भैरव)

×		०		२		०		३		४	
सां	सां	ध	ध	प	प	ध	प	म	म	–	–
जि	न	–	ह	–	ठ	क	र	–	री	–	–
प	प	रे	रे	ग	म	प	ग	–	म	रे	सा
न	ट	–	ना	–	–	ग	र	–	सो	–	–
ध	–	–	सां	ध	प	म	ग	रे	ग	म	प
मे	–	–	रो	–	–	ही	–	–	दे	–	व
म	–	–	रे	–	–	ग	रे	–	सा	–	–
गा	–	–	–	–	–	–	–	–	न	–	–

आभोग (कान्हरो)

×		०		२		०		३		४	
म	प	–	नि	प	मप	नि	सां	–	सां	–	–
मु	र	–	ली	–	––	ता	–	–	न	–	–

नि	सां	—	रें	—	सां	नि	सां	—	ध	नि	प
का	—	—	न्ह	—	र	गा	—	—	व	—	त
म	—	—	प	नि	प	ग	—	म	रे	—	सा
सो	—	—	सु	—	न	ले	—	—	री	—	—
नि	सा	—	रे	—	सारे	ग	—	म	रे	सा	—
का	—	—	—	—	——	—	—	—	—	न	—

संचारी—२ (नायकी, अडानो)

×		०		२		०		३		४	
प	ग	म	रे	सा	रे	प	—	—	नि	म	प
रं	—	—	ग	—	रं	गी	—	—	ली	—	—
म	प	—	नि	म	प	सां	—	निध	नि	प	—
सु	घ	—	र	—	—	ना	—	य—	की	—	—
म	प	नि	सां	रें	रें	गं	—	मं	रें	—	सां
तू	—	—	जि	—	य	मैं	—	—	न	—	अ
रें	सां	रें	नि	सां	निध	नि	प	—	नि	म	प
डा	—	—	—	—	——	—	न	—	—	—	—

आभोग–२ (केदारो, बिहाग)

×		०		२		०		३		४	
म	–	–	प	–	–	ध	प	म	मग	प	धप
नं	–	–	द	–	–	दा	–	–	स–	–	के–
सां	–	रें	सां	–	–	नि	ध	प	पमं	धप	म
दा	–	–	रो	–	–	क	रि	–	के–	––	–
सा	–	–	म	ग	मग	प	–	–	नि	–	नि
यों	–	–	हा	–	बि–	हा	–	–	ग	–	यो
सां	–	नि	प	ग	म	ग	सा	म	प	नि	नि
मा	–	–	–	–	–	न	–	सा	–	रं	ग

मल्हार के प्रकार

ग्रन्थों में 'मल्हार' राग को वर्षाऋतु का प्रधान राग कहा है । कुछ ग्रन्थों में 'मेघ' नाम से और कुछ ग्रन्थकारों ने 'मल्हार' नाम से उल्लेख किया है । पुष्टिमार्गीय हवेलीसंगीत–प्रणालि में भी यही शास्त्रदृष्टि अनुसार प्रातःकाल से सायंकाल की प्रत्येक सेवा में हर–समय मल्हार राग के कीर्तन गाये जाते हैं । आषाढ शुक्ल द्वितीया से 'मल्हार' का आरम्भ होता है और श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के बाद हिंडोला (झूला) विसर्जन होते ही राग समाप्त होता है । श्री...कों जगाये वे से लेकर पोढायने तक की वर्षाऋतु की लीला के सेंकडों पद इस राग में गाये जाते हैं । सम्प्रदाय में 'मल्हार' के लगभग ६ प्रकार गाये जाते हैं, परन्तु संग्रह–ग्रन्थों में यह सभी पदों का समावेश 'राग–मल्हार' शीर्षक के अन्तर्गत ही किया हुआ दृष्टिगोचर होता हैं ।

कतिपय संग्रहों में 'मेघ मल्हार' 'सोरठ मल्हार' और 'गौड मल्हार' नाम पाये जाते हैं, किन्तु कुछ दो चार नियत पदों के शीर्षक रूप में ही दिखाई देते हैं। सम्प्रदाय के लिखित संग्रहग्रन्थों तथा क्रियात्मक गान-शैली की ओर दृष्टि करने से स्पष्ट होता है कि ऋतुप्रधान रागों के छः प्रकार व्यवहार में होते हुए केवल मल्हार राग के नाम से संबोधन करने की प्रथा परम्परागत रूप में चालू रही है, किन्तु आजकल हवेलीसंगीत के रागप्रकारों का विभाजन करना संशोधनीय दृष्टि से अत्यावश्यक है। अतः हमारे मतानुसार सम्प्रदाय में मल्हार राग की गानशैली में षड्—विध प्रकार के मल्हार दृष्टिगत होते हैं। (१) मेघ मल्हार—शुद्ध मल्हार, (२) गौड मल्हार, (३) सोरठ मल्हार, (४) सूर मल्हार, (५) धूरिया मल्हार और (६) मल्हार।

राग मेघ, प्राचीन मल्हार

संस्कृत ग्रन्थों में मेघ एवं मल्हार को वर्षाऋतु का मुख्य राग माना गया है और यह दोनों नामो के वर्णन प्राप्त होते हैं। 'संगीतरत्नाकर' 'रागलक्षण' 'संगीतदर्पण' 'हृदयकौतुक' 'हृदयप्रकाश' 'संगीतपारिजात' इन ग्रन्थों में 'मेघ' राग का उल्लेख किया गया है, परन्तु अन्य ग्रन्थकारों ने 'मल्हार' का ही वर्णन किया है, मेघ का उल्लेख किया नहीं है। दर्पणकारने मेघ राग का स्वरूप—ध्यान तथा राग—लक्षण इस प्रकार कहा है।

---

१. मेघरागो मन्द्रहीनो ग्रहांशन्यासधैवतः। [सं. रत्नाकर]
२. मेघः पूर्णो धत्रयः स्यादुत्तरायतमूर्छनः। (सं. दर्पण)
३. गायकप्रियमेलाच्च मेघरागः सुनामकः। (रागलक्षण)
४. पसौ मेघो हि षाडवः। (हृदयकौतुक)
५. तत्र मेले भवेन्मेघः। (हृदयप्रकाश)
६. यतो वर्षासु गेयोऽयं मेघ इत्यपि कीर्तितः। (सं. पारिजात)

ध्यान—नीलोत्पलाभवपुरिन्दुसमानवक्त्रः पीताम्बरस्तृषितचातकयाच्यमानः ।
पीयूषमन्दहसितो घनमध्यवर्ती वीरेषु राजति युवा किल मेघरागः ॥

लक्षण—मेघः पूर्णो धत्रयः स्यादुत्तरायतमूर्छनः ।
विकृतो धैवतो ज्ञेयः शृंगाररसपूर्वकः ॥ [सं. दर्पण]

इसमें 'वीरेषु राजति'' 'शृंगार–रस, तथा मेघ को विकृत धैवतयुक्त सम्पूर्ण माना गया है। जैसे–ध नि सा रि ग म प ध।

लोचन पण्डित ने ''धनिषादौ च शांर्गस्य कर्णाटस्य गमौ यदि'' कहा है। इसमें शांर्गदेव (सारंगदेव) का धैवत अर्थात् ''धश्च शुद्धनिषादः स्यात्'' समझा जाय गा, अतः शुद्ध धैवत अपना कोमल निषाद होता है। इस श्लोक के सम्बन्धानुसार 'मेघ' का थाट 'सा रि ग म प नि सां' होता है। इनमें 'कर्णाटस्य गमौ' के उल्लेख से अपनी पद्धति का गान्धार कोमल कहा जायगा, किन्तु सम्प्रदाय के धूरिया मल्हार के अतिरिक्त प्रकारों में कोमल गान्धार वाला मल्हार का कोई भी प्रकार गाया नहीं जाता।

हृदय पण्डित ने अपने ग्रन्थों में मेघ का निम्न प्रकार दिया है—

'गधैवतनिषादास्तु यत्र तीव्रतराः स्मृताः ।
तत्र मेले भवेन्मेघः मेघः सम्पूर्ण उच्यते ॥ [हृदयप्रकाश]

सा रि ग म प ध निसां। रि सा नि ध प म म, रि सा। नि ध प म प सां।*

उपर्युक्त ग्रन्थोक्त उल्लेखो में ग ध नि तीव्रतर बताये हैं, जो अपनी प्रचलित पद्धति का शुद्ध ग, कोमल नि, और शुद्ध नि होता है। हवेलीसंगीत की प्राचीन परम्परा का मेघ–मल्हार इसी स्वर-स्वरुप में गाया जाता था, परन्तु यह प्राचीन प्रकार आजकल सुनने में आता नहीं है।

'मेघ' राग के सम्बन्ध में कुछ ग्रन्थोक्त उल्लेख हम देख चुके हैं, परन्तु बहुत से ग्रन्थकारों ने मेघ का वर्णन नहीं, किन्तु मल्हार का

---

* हिं. सं. पद्धति, भाग ४ (पं. भातखण्डे), पृ. ५५९

वर्णन किया है। जैसा कि पुण्डरीक ने 'सद्रागचन्द्रोदय' 'रागमंजरी' 'रागमाला' ग्रन्थों में मेघ का वर्णन किया नहीं है। तदुपरान्त 'स्वरमेलकलानिधि' 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका' 'रागविबोध' तथा 'संगीतसारामृत' आदि ग्रन्थों में मेघ का नहीं, मल्हार का वर्णन प्राप्त होता है।

किंवदन्ती के आधार पर कहा जाता है कि अकबर बादशाह के समय में 'दीपक' और 'मेघ' राग के गानों से बनी हुई करुण घटना के कारण वैष्णव सम्प्रदायों के संगीताचार्यों ने[१] 'दीपक' और 'मेघ' का गान किया नहीं होगा। सम्भव है कि इसी कारणवशात् उपर्युक्त ग्रन्थकारों ने भी मेघ के स्थान पर 'मल्हार' का ही वर्णन किया है।

पं. अहोबल ने 'संगीतपारिजात' ग्रन्थ के आरम्भ में ही कहा है कि "अथ मेघो मल्लारोऽपि अर्थात् यही 'मेघ' राग है और मल्हार भी।" यही मान्यता दूसरे श्लोक में स्पष्ट करते हुए कहा है कि "यतो वर्षासु गेयोऽयं मेघ इत्यपि कीर्तितः।"

अर्थात् 'यह वर्षाऋतु में गाया जाता या गाने योग्य है, अतः इसे 'मेघ' राग भी कहते हैं'।

लोचन पण्डित ने भी कहा है कि—

"मेघरागस्य संस्थाने मेघो मल्हार एव च।" (तरंगिणी)

उपर्युक्त ग्रन्थों के उल्लेखानुसार का 'मेघ—मल्हार' जो आजकल अप्रचलित है वही अष्टछाप—संगीत-परम्परा का शुद्ध-मल्हार भी कहा जायगा। इस प्रकार 'मेघ मल्हार' का उल्लेख केवल 'श्रीकुम्भनदासजी' और 'श्रीकृष्णदासजी' के प्राचीन पदसंग्रहों में एक-एक प्रद ही प्राप्त होता है। तानसेन सम्बन्धित 'दीपक' और 'मेघ' की घटना के पश्चात्

---

[१] मेघ-मल्हार का उल्लेख केवल अष्टछाप के श्रीकुम्भनदासजीकृत एक पद में (देखिये 'कुंभनदास' कांकरौली प्रकाशन, पृ. १२१) तथा 'कृष्णदास' (पृष्ठ ३६२, कांकरोली प्रकाशन) के पद में प्राप्त होता है।

उन्होंने तथा अष्टछाप के अन्य संगीताचार्यों ने मेघ–मल्हार के स्थान पर 'मल्हार' का ही उल्लेख किया हुआ प्राचीन हस्तलिखित पद-संग्रहों से स्पष्ट होता है ।

मेघ–मल्हार के इस प्राचीन प्रकार को हम 'शुद्ध मल्हार' कहना ही उचित समझेंगे । सम्प्रदाय के पदसंग्रहों में 'मल्हार' के शीर्षक में ही इस प्रकार के कतिपय पदों का समावेश किया हुआ है । संवत् २००० के पुर्व यानि ई. स. की चालू शताब्दी के पुर्व भाग के प्राचीन कीर्तनकारों से इस प्रकार का मल्हार सुनने का कुछ सुयोग प्राप्त हुआ था । इस लेखकने अपने पिताजी से भी इस प्रकार के दो–चार कीर्तन जो सुने हुए थे, इसी आधार पर यहाँ 'शुद्ध मल्हार' की चर्चा के पश्चात् उसी पदों को स्वरलिपि—बद्ध करके प्रकाशित किया गया है ।

राग शुद्ध-मल्हार (प्राचीन मेघमल्हार)

शुद्ध मल्हार का यह प्राचीन प्रकार आजकल प्रचार में नहीं है । इस राग का थाट काफी मानना उचित है । इस में दोनों निषाद साथ साथ में लिये जाते हैं । गान्धार और धैवत स्वर वर्ज्य होने से जाति औडुव है । दोनों निषाद साथ में लेते समय कोमल निषाद पर धैवत स्वर कणरूप में व्यक्त होता है, किन्तु जब दोनों निषादों को मींड से लिया जाता है तब धैवत का कण बहुत कम दिखाई देता है । ऋषभ स्वर पर मध्यम का कण इस राग में आवश्यक है । वादी स्वर सा संवादी पंचम माना जाता है । मध्यम स्वर मुक्त रहता है । प्रकृति गंभीर है ।

उचित स्थान पर मींड और गमक का प्रयोग किया जता है इस राग का गानसमय प्रहर की दृष्टि से रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता

है, किन्तु वर्षाऋतु का यह मोसमी राग होने से इस ऋतु में हर समय चाहे जब गा सकते हैं । ग नि वर्ज्य का 'शुद्ध मल्हार' भी आजकल प्रचार में दिखाई देता है, किन्तु हवेली-संगीतपरम्परा के 'प्रचलित मल्हार से वह भिन्न है । दोनों निषादों का साथ ही प्रयोग तथा धैवत का कण लेने से 'मियां मल्हार' का कुछ भास होता है, किन्तु शुद्ध ध तथा कोमल गान्धार इस राग में वर्ज्य होने से रागभेद स्पष्ट होता है । कुछ मान्यतानुसार इस राग के आधार को दष्टि समक्ष रख कर 'मियां मल्हार' का सर्जन होना असम्भवित नहीं है । निसा, मरे, रेप, निमप, तथा मरे, मरे, मरे, रेसा और पनिनिसां' इस स्वरसमुदाय से इस राग स्पष्ट होता है और सारंग का अंग दूर हो जाता है ।

म म ध
आरोह—सा, रेम, रेप, मप, नि, निसां ।

म
अवरोह—सां, निप, म, मरे, प, मरे, रेसा ।

ध
पकड—मरे, प, मप, नि, निसां, निमप, मरे सा ।

अष्टछाप के संगीताचार्य श्री परमानंददासजी ने: गाये हुए निम्न पद को 'राग शुद्ध-मल्हार (मेघ.मल्हार)' में स्वरांकन-सहित उदाहरणरूप में प्रगट कर रहे हैं ।

राग मेघ (प्राचीन मल्हार)—ताल प्राचीज रूपक

इन मोरन की भांत देखि नाचत गोपाला ।
मिलवत *गति-भेद नीके, मोहन नटसाला ॥१॥
गरजत घन मंद-मंद, दामिनी दरसावे ।
रिमकि झिमकि बूंद परें, राग मल्हार गावे ॥२॥

---

* पाठान्तर 'सूर'

चातक पिक सघन कुंज, बार बार कूजे ।
वृंदावन कुसुमलता चरन कमल पूजे ॥३॥
सुर नर मुनि कामधेनु कौतिक देखनि आवे ।
वारि फेरि भक्ति उचित, 'परमानंद' पावे ॥४॥

स्थायी

×		२				×		२			
म	रे	म	रे	प	—	नि̲	—	नि	सां	—	सां
मो	—	र	न	का	—	भाँ	—	त	दे्	—	खि
नि̲	मप	म	रे	प	प	म	रे	सा	रे	ऩि	सा
ना	——	च	त	—	गो	पा	—	ला	—	इ	न

अन्तरा

×		२				×		२			
म	म	प	प	नि̲	प	सां	—	सां	नि	सां	सां
मि	ल	व	त	ग	ति	भे	—	द्	नी	—	के
रें	—	मं	रें	सां	सां	नि̲	प	मप	म	रे	सा
मो	—	ह	न	न	ट	सा	—	ला—	—	इ	न

संचारी

×		२				×		२			
म	म	रे	रे	म	म	प	—	प	प	—	प
गा	र	ज	त	घ	न	मं	—	द्	मं	—	द्

नि	–	नि	सां	नि	प	मप	म	रे	रे	नि	सा
दा	–	मि	नी	द	र	सा–	–	–	वे	–	–

आभोग

×		२				×		२			
रें	रें	रें	सां	रें	पं	मं	–	मं	रें	सां	–
रि	म	कि	झि	म	कि	बूं	–	द	प	रें	–
म	म	मरे	प	–	प	मप	निप	मप	म	रे	सा
रा	ग	म–	ल्हा	–	र	गा–	––	––	वे	इ	न

अष्टछाप के संगीताचार्य श्रीछीत स्वामी ने गाया हुआ निम्न पद मी उदाहरणार्थ इसी राग में स्वरांकन—सहित दिया गया है।

राग (शुद्ध) मल्हार—ताल चौताल

यह नागर नंदलाल कुंवर मोरन संग नाचें। कटि—तट पट किंकिनी कल, नूपुर रुनझुन करें, नृत्य करत चपल—चरन, पात घात साँचें ॥१॥ उदित मुदित सघन गगन घोरत घन दे दे भेद कोकिला कल—गान करत, पंचम सुर साचे। 'छीतस्वामी' गोवर्धननाथ साथ बिहरत वर, रासबिलास वृंदावन प्रेमवास यांचे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
		म	म								
म	रे	रे	रे	म	रे	प	–	प	नि	म	प
ना	–	ग	र	नं	द	ला	–	ल	कुं	व	र

म	—	म	रे	प	प	म	—	रे	सा	नि़	सा
मो	—	र	न	सं	ग	ना	—	चैं	—	य	ह

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
							ध				
म	म	म	प	प	प	नि	नि	नि	—	सां	सां
क	टि	त	ट	प	ट	किं	कि	नी	—	क	ल
									ध		
म	—	प	प	नि	प	निसां	रें	नि	नि	प	—
नू	—	पु	र	रु	न	झु-	न	क	रें	—	—
	प	मं					गं				
प	रें	रें	सां	रें	पं	मं	मं	रें	सां	नि	सां
नृ	—	त्य	क	र	त	च	प	ल	च	र	न
	म	रे	प	म	प	मप	सां	निप	मप	म	रे
निप	मप	म	रे	प	प	म	—	रे	सा	नि़	सा
पा—	——	त	पा	—	त	सां	—	चैं	—	य	ह

संचारी

×		०		२		०		३		४	
			म	म	म		ग				
म	म	म	रे	रे	रे	म	म	मरे	प	प	प
उ	दि	त	मु	दि	त	स	घ	न-	ग	ग	न

म	रे	प	प	म	प	$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{नि}}$	नि	सां	$\underline{\text{नि}}$	प
घो	—	र	त	घ	न	दे	—	दे	मे	—	द
म	रे	$\overset{\text{म}}{\text{रे}}$	$\overset{\text{म}}{\text{रे}}$	$\overset{\text{म}}{\text{रे}}$	प	म	—	रे	सा	रे	सा
को	—	कि	ला	क	ल	गा	—	न	क	र	त
म	रे	प	प	म	प	म	—	रे	प	—	—
पं	—	च	म	सु	र	सां	—	—	चें	—	—

राग गौड मल्हार

गौड मल्हार राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है । कोई इसका बिलावल (शंकराभरण) थाट भी मानते हैं । गौड और मल्हार के संयोग से यह राग बना हुआ है। क्वचित् बिलावल की छाया भी दिखाई देती है । 'रेगरेमगरेसा' यह गौड राग का अंग है, इसके साथ मल्हार का 'मरे, प, मपधसां, धपम' इन स्वरों को जोड़ने से गौड– का स्वरूप स्पष्ट होता है । कभी कभी 'पपनिध, निसांरेंसां' इन स्वरों का प्रयोग कोई गुणीलोग करते हैं तब बिलावल राग की छाया भी मालूम होती हैं। रेप की संगति सुन्दर दिखाई देती है। रेम, रेप, धसां, ध$\underline{\text{नि}}$प और धसांधपम, तथा रेग, सारेम, मप, मग, मग, रेगरेमगरेसा, इन स्वरसंगतियों को जोड़ने से गौड मल्हार के अतिरिक्त मल्हार का कोई प्रकार संभवित नहीं है । वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज स्वर है, कोई पंचम को भी वादी मानते हैं । गानसमय रात्रि का दूसरा प्रहर है, किन्तु वर्षाऋतु में सर्वकालीन यानि चाहे जब गाया जाता है ।

× खमाजीमेलके ख्यातो गौडमल्लारनामकः ।
शंकराभरणेऽप्येनं केचिदाहुर्विपश्चितः ॥
(लक्ष्यसंगीत)

जाति सम्पूर्ण है यानि आरोह अवरोह दोनों में सातों स्वरों का उपयोग होता है। शुद्ध निषाद आरोह में लिया जाता है, परन्तु दुर्वल होने से 'धसां' और 'सांध' की संगति अधिकतर दिखाई देती है। कोमल निषाद हमेशां अवरोह में 'निप' अथवा 'धनिप' संगति से ही लिया जाता है। गौड मल्हार का एक अन्य प्रकार भी प्रचार में है, जिस में कोमल गान्धार का प्रयोग होता हैं, किन्तु अष्टछाप–परम्परा के द्रुपदों में शुद्ध गान्धार का गौड मल्हार ही गाया जाता है। हवेली-परम्परा में गाये जाने वाले मल्हार के पदों में यह राग अधिकतर दिखाई देता है। प्रचार में कुछ द्रुपद गायक कोमल गान्धार का प्रयोग करते हैं तथा दोनों गान्धार लेने वाले द्रुपद भी देखने में आते हैं। कोमल गान्धार का प्रयोग करने वाले इसे काफी थाट का राग मानते हैं। ख्याल–गायक हंमेशां तीव्र गान्धार का प्रयोग करते हैं। तीव्र गान्धार का गौड मल्हार अधिक प्रचलित है। यही नहीं, हवेली–संगीत' परम्परा में तीव्र गान्धार का ही गाने की प्रथा परम्परागत होने से लेखक के मतानुसार इस राग को खमाज थाट का राग मानना :अधिक ठीक है। सम्प्रदाय में इस प्रकार के बन्दिश के सभी पदोंको केवल 'राग मल्हार' ही कहने का रिवाज है।

आरोह—रे ग रे म ग रे सा, रेप, मप, धसां।

अवरोह—सांधनिप, मपमग, रेसा

पकड–स्वर—रेगरेमगरेसा, रेपमप, धसां, धपम

राग (गौड) मल्हार–ताल चौताल

माई तेसोई वृंदाबन तेसीय हरित भूमि, तेसीय बीरबधू चलत सुहाई माई।
तेसेई कोकिला कल कुहू कुहू कूजत,
तेसेई नाचत मोर निरखत सोभा नेननि सुखदाई ॥१॥

तेसी ही नवरंग नवरंग बनी जोरी, तेसेई गावत राग मल्हार तान मनभाई ॥
'गोविंद'प्रभु सुरंग हिंडोरे झूलें फूलें आछे,
रंगभरे चहुँदिस तें घटा जुरि आई ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	—	नि	प	ध	नि	सां	—	नि	सा	सां
ते	सो	—	ई	—	वृं	दा	—	—	ब	—	न
नि	प	म	प	—	प	धनि	सां	धप	मग	प	म
ते	सी	—	य	—	ह	रि—	—	त—	भू—	—	मि
म	रे	रे	ग	म	प	मग	म	रे	रे	सा	सा
ते	—	सी	—	य	—	बी—	—	र	ब	—	धू
म	रे	प	प	म	प	धनि	सां	धप	म	ग	म
ल	ग	—	त	—	सु	हा—	—	ई—	मा	—	ई

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
नि	—	नि	सां	—	नि	सां	सां	—	नि	सां	सां
ते	—	से	ई	—	को	कि	ला	—	क	—	ल
सां	म	प	प	नि	प	निसां	रें	—	ध	नि	प
कु	हू	—	कु	हू	—	कू—	—	—	ज	—	त
मग	रे	रे	ग	म	प	मग	म	रे	रे	सा	सा
ते—	—	से	ई	—	ना	च—	—	त	मो	—	र

प	रें	—	सां	रें	गं	पं	गं	मं	रें	—	सां
नि	र	—	ख	—	त	सो	—	—	भा	—	—
सां	ध	नि	प	म	प	धनि	सां	धप	म	ग	म
ने	—	न	नि	सु	ख	दा—	—	ई	मा	—	ई

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	म	म	रे	रे	रे	प	—	ध	नि	प
ते	—	सी	ही	—	न	व	—	—	रं	—	ग
म	म	रे	प	म	प	धनि	सां	ध	प	म	ग
न	व	—	रं	—	ग	ब—	नी	—	जो	—	री
म	गम	रे	ग	म	प	ध	प	म	रे	—	सा
ते	से—	ई	गा	व	त	रा	ग	म	ल्हा	—	र
म	रे	प	प	म	प	ध	नि	प	म	रे	सा
ता	—	न	म	—	न	भा	—	—	ई	—	—

राग (गौड) मल्हार—ताल सूलताल

माईरी घन मृदंग रस भेद सों बाजत, नाचत चपला चंचल गति ।
कोकिला अलापत, पपैया उरप लेत, मोर मधुर सुर साजत ॥१॥
दादुर ताल धारि धुनि सुनियत हे, रुनझुन रुनझुन नूपुर बाजत ।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक, कुंजमहल दोऊ राजत ॥२॥

स्थायी

×		०		२		३		०	
नि	ध	नि	सां	—	सां	—	ध	नि	प
ध	न	मृ	दं	—	ग	—	र	—	स
म	रे	प	प	मप	धसां	ध	प	म	ग
भे	—	द	सों	बा—	——	ज	—	त	—
रे	ग	प	ग	म	रे	—	सा	रे	सा
ना	—	च	त	च	प	—	ला	—	—
ध	—	नि	सां	नि	प	म	प	ग	म
चं	—	च	ल	ग	ति	मा	—	ई	री

अन्तरा

×		०		२		३		०	
नि	नि	नि	नि	सां	नि	सां	सां	—	—
को	कि	ला	अ	ला	—	प	त	—	—
प	प	नि	ध	नि	सां	रें	नि	ध	प
प	पै	या	—	उ	र	प	ले	—	त
रें	—	गं	मं	रें	सां	रें	सां	ध	प
मो	—	र	म	धु	र	—	सु	—	र
नि	ध	नि	सां	नि	प	म	प	ग	म
सा	—	—	—	ज	त	मा	—	ई	री

संचारी

×		०		२		३		०	
म	—	म	म	प	—	प	प	म	प
दा	—	दु	र	ता	—	ल	धा	—	रि
म	रे	प	प	ध	सां	ध	प	म	ग
धु	नि	सु	नि	य	त	—	हे	—	—
रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा	सा
रु	न	झु	न	रु	न	—	झु	—	न
म	रे	म	प	ध	सां	ध	प	म	—
नू	—	पु	र	बा	—	—	ज	त	—

राग (गौड) मल्हार—ताल धमार

तुम घन से हो घनस्याम गरज गरज आये अनत जाइ बरसे ।
कहूं बरसत कहूं नेह जनावत, कहूं लावत झरसे ॥१॥
मुखकी अलबलाई (जूठी मीठी नात ने) हम ही करने आये,
ओरनके पग परसे हो ।
'धोंधी'के प्रभु तुम बहुनायक, इन बातन सरसे ॥२॥

स्थायी

गरे	सा	ग	रेग
तु-	म	घ	न-

×					२		०			३			
म	—	—	ग	प	प	पध	ग	प	मग	म	रे	प	प
से	—	—	हो	—	घ	न-	स्या	—	म-	ग	र	ज	ग

नि	ध	नि	सां	—	सां	—	रें	सां	ध	नि	प	म	प
र	ज	—	आ	—	ये	—	अ	न	त	जा	—	इ	—
मप	धनि	सां	ध	प	ग	प	म	ग	रेसा				
ब—	र—	—	से	—	—	—	हो	—	—				

अंतरा

×					२		०			३			
म	प	—	नि	ध	नि	नि	सां	सां	—	रें	—	सां	—
क	हूं	—	—	—	ब	र	स	त	—	क	—	हूं	—
सां	गं	—	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	ध	नि	प	—
ने	—	—	ह	—	ज	—	ना	—	—	व	—	त	—
म	रे	प	पध	निसां	ध	प	ग	प	मग	रेग	सा,	ग	रेग
क	हूं	—	ला—	——	व	त	झ	र	से—	——	—,	घ	न—

संचारी

×					२		०			३			
म	म	रे	म	—	—	—	प	प	प	ध	—	प	—
मु	ख	—	की	—	—	—	अ	ल	ब	ला	—	ई	—
म	म	रे	प	—	—	प	ध	नि	सां	ध	प	म	—
ह	म	—	ही	—	—	क	र	न	—	आ	—	ये	—

सां	नि	सां	ध	प	म	—	ग	रे	ग	सा	रे	ग	—
ओ	—	—	र	—	न	—	के	—	—	प	—	ग	—
प	प	ध	म	—	—	—	ग	रे	ग	सा	—	—	—
प	र	—	से	—	—	—	—	—	—	हो	—	—	—

राग सोरठ मल्हार

यह राग सोरठ और मल्हार के संयोग से बना हुआ है । पुष्टि-सम्प्रदाय की कीर्तनप्रणाली में न गाये जाने वाले मल्हार के प्रकारों में अधिकतर सोरठ मल्हार और गौड मल्हार के ही पद गाये जाते हैं ।

थाट खमाज है । आरोह में शुद्ध तथा अबरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है । वादी रे तथा संवादी धैवत है, कोई पंचम भी मानते हैं । अवरोह में गान्धार वर्ज्य अथवा मींड में छुपा हुआ रहता है । अतः जाति षाडव अथवा कोई सम्पूर्ण भी मानते हैं । सोरठ राग से मिलता हुआ हैं । राग 'देस' में गान्धार स्पष्ट रूप से लिया जाता है, शुद्ध गान्धार अधिकतर मींड में ही लिया जाता है ।

आरोहावरोह :—सा, रे, म, प, निमप, ध, सां । सां, निध, प, धम, रे, प, मगरे, नि, सा.

पकड :—मपनि, सां, रें निध, प, ध, मरे, प, धसां, निधप, मप, मरे, नि, सा ॥

स्वरविस्तार :—

(१) सा, म, पमरे, मरे, मप, धपमगरे, पमप, मपध, सां, धप, मगरे निसा ॥

(२) मप, मरेमप, ध, सां, धपम, पम, रे, मपधसां, निसां, निसांरें, सां, पंमं, रें, सां, पनिसां, निधप, धमगरे, निसा ॥ (३)

(३) मप, प, मपधसां, धपम, निसां, निधपम, मगरे नि़, सा ॥

(४) मप, नि, सां, मं, रें, रेंगंरें रेंनिसां, निध पमगरे, प, मगरे, निसा ।

राग सोरठ मल्हार—ताल आडचौताल (द्विगुण मात्रा ७)

सखीरी (मोहि) बूंद अचानक लागी ।
सोवत हुती मदन मदमाती, घन गरज्यो तब जागी ॥१॥

दादुर मोर पपैया कोयल, बोलत हें अनुरागी ।
'कुंभनदास' लाल गिरिधरसों, जाय मिली बडभागी ॥२॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
नि	सां	रें	नि	धप	म	गरे	मरे	प	—	धनि	सां	धप	म
बूं	द	अ	चा	ऽऽ	न	कऽ	लाऽ	गी	—	स—	खी	रीऽ	ऽ
म	रे	नि़सा	रे	प	मग	रेप	म	—	रे	नि़	—	सा	—
बूं	द	अऽ	चा	ऽ	नऽ	कऽ	ला	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

३		४		×	२		३		४		×	२	
म	प	नि	नि	सां	सां	—	—	—	—	सां	रें	रें	रेंगं
सो	ऽ	व	त	हु	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	द	न	ऽ
रें	सां	रें	नि	सां	—	—	प	नि	सां	रें	नि	ध	प
म	द	मा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	घ	न	ग	र	ज्या	ऽ	ऽ

ध	प	मग	रेसा	म	रे	म	प	—	—	—	—	मप	धनि	सां
त—	ऽ	बऽ	ऽऽ	जा	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सऽ	खीऽ	ऽ
ध	प	म	प	म	रे	निसा	रे		प	मग	रेप	म	—	रे
री	ऽ	ऽ	ऽ	बूं	द	अऽ	चा		ऽ	नऽ	कऽ	ला	ऽ	ऽ

संचारी

×	२	३			४		×	२		३		४	
म	रे	म	प	—	प	प	म	प	—	ध	सां	धप	म
दा	दु	र	मो	ऽ	र	प	पै	या	ऽ	कोऽ	ऽऽ	यऽ	ल
रे	नि़	सा	रे	—	रे	गरे	म	—	—	रे	—	नि़	—
बो	ल	त	हैं	ऽ	अ	नु	रा	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ
सा	—	—											
ऽ	ऽ	ऽ											

राग सोरठ मल्हार—ताल आदिताल (त्रिताल मात्रा)

क्यों न भये हम मोर, वृंदाबन !
करत निवास गोवरधन ऊपर, निरखत नंदकिसोर ॥१॥
क्यों न भये बंसीकुल सजनी, अधर पीवत घनघोर ।
क्यों न भये गुंजा बनबेली, रहत स्यामजुकी ओर ॥२॥
क्यों न भये मकराकृत कुंडल, स्याम स्रवन झकझोर ॥
'परमानंददास'को ठाकुर, गोपिनके चितचोर ॥३॥

स्थायी

× २ ० ३ × २ ० ३
सां निसां रेंनि धपमग रेम रेप पधनि सांधप म
क्यों ऽन भये ऽऽहऽ ममो ऽर वृंदाऽ ऽबऽ न
— गरेनि़ सारे पमग रेपम —रे —नि़ —सा —
ऽ क्योंऽन भये ऽहऽ मऽमो ऽऽ ऽऽ ऽर ऽ

अन्तरा

× २ ० ३ × २ ० ३
— मपनि निसां —सां सांम मम रेरे निसां सां
ऽ करत निबा ऽस गोव रध नऊ ऽप र
प निसां रेंनि धपम रेम रेप पधनि सांधप म
नि रख तनं ऽऽद किसो ऽर वृंदाऽ ऽबऽ न

संचारी

× २ ० ३ × २ ० ३
म रेंम मप —प —धनि सांध पम पम —
क्यों —न भये ऽबं ऽसीऽ ऽकु लस जनी ऽ
नि निसां सांनिध पमग रेपम —— रेनि़ —सा —
अ धर पीवऽ तघऽ नऽघो ऽऽ ऽऽ ऽर ऽ

राग सूर मल्हार

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। आरोह में धैवत और गान्धार वर्ज्य है तथापि अवरोह में धैवत लिया जाता है। दोनों निषादों का प्रयोग होता हैं। वादी स्वर षड्ज और संवादी पंचम है। मध्यम स्वर न्यास है। ग वर्ज्य स्वर है और धैवत स्वर अवरोह में ही किया जाता हैं। यह राग सारंग जैसा दिखाई देता है। मल्हार में मरे मरे की मींड के प्राधान्य से सोरठ राग का भास होता है। निमप और निधप इत्यादि स्वरसे सूर-मल्हार स्पष्ट होता है। मधमध-सारंग और मल्हार के मिश्रण से यह राग उत्पन्न होता है। यह राग अष्टछाप के सूरदासजी ने निर्माण किया है, जो वर्षाऋतु के अन्य मल्हारों के समय तक गाया जाता है।

(चोखडा) राग सुर मल्हार—ताल चंपक (अर्ध आडाचौताल)

सरस हिंडोरना माई झूले श्रीगोकुलचन्द ॥ध्रुव॥
द्वे खंभ कंचन के मनोहर रतनजटित सुरंग।
चार डांडी सरल सुंदर निरखि लज्जित अनंग।
पटली पिरोजा लाल लटकत झूमका बहुरंग।
मरुवे मानिक चूनी लागी बिच बिच हीरा तरंग ॥१॥
नव कुंज कुंज झुलाइ झुलवति सहचरी चहुँ ओर।
मनहु कुमुदिनी कमल फूले निरखि जुगल-किसोर।
ब्रजवधू तृन तोरि ड़ारती देति प्रान अंकोर।
'कृष्णदास' ब्रजवास दीजे नागर नंदकिसोर ॥४॥

स्थायी

$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{नि}}$	म	प
स	र	स	हिं

१	२		३		४		१	२		३		४	
रें	नि	सां	नि	प	म	प	नि	नि	प	म	रे	म	प
डो	—	र	ना	—	मा	ई	झू	ले	श्री	गो	—	कु	ल
नि	ध	प	म	प	नि	सां	रें	नि	सां	नि	प	सां	—
चं	—	द	स	र	स	हिं	डो	—	र	ना	—	ढे	—

चलति

१	२		३		४		१	२		३		४	
सां	—	सां	नि	ध	म	प	सां	—	सां	नि	ध	प	प
खं	—	भ	कं	—	च	न	के	—	म	नो	—	ह	र
म	प	प	ध	नि	ध	प	म	—	रे	म	—	प	—
र	त	न	ज	टि	त	सु	रं	—	—	—	—	ग	—
सां	—	सां	नि	—	प	निध	नि	सां	सां	नि	ध	प	प
चा	—	र	डां	—	डी	—	स	र	स	सुं	—	द	र
म	प	प	ध	नि	ध	प	म	—	प	म	—	नि	नि
नि	र	खि	ल	जिज	त	अ	नं	—	—	ग	—	प	टु

चलति

१	२		३		४		१	२		३		४	
नि	—	नि	नि	—	सां	—	रें	मं	रें	सां	नि	सां	सां
ली	—	पि	रो	—	जा	—	ला	—	ल	ल	ट	क	ब

रें	–	रें	सां	–	सां	सां	नि	–	प	नि	सां	सां	सां
झू	–	म	का	–	ब	हु	रं	–	–	ग	–	म	रु
सां	–	–	सां	–	सां	सां	नि	प	प	नि	–	सां	–
बे	–	–	मा	–	नि	क	चू	–	नी	ला	–	गी	–
रेंरें	मं	मं	रें	सां	निसां	रेंसां	नि	ध	प	म	प	नि	सां
बिच	बि	च	ही	–	रा–	त–	रं	–	ग	स	र	स	हिं

राग धूलिया मल्हार

इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के प्रथम खण्ड में पृष्ठ १८९ पर नायक धोंधी का वर्णन किया गया है। यह राग उसीकी देन होना सम्भवित है। जैसे धोंधी का धोंदी; धूंडी नाम अपभ्रंश हुआ है उसी प्रकार धूंडिया–मल्हार का अपभ्रंश धूलिया मल्हार नाम प्रचलित होना असम्भवित नहीं है।

थाट काफी है। आरोह में ग वर्ज्य और अवरोह सम्पूर्ण है। दोनों निषाद लिये जाते हैं। वादी स्वर रे, संवादी प है। सोरठ–मल्हार से मिलते झूलते इस राग की भिन्नता यह है कि सोरठ में गान्धार मींड में लिया जाता है। और ये दोनों गान्धार स्पष्ट रूप से लिये जाते हैं। दोनों गान्धार का प्रयोग गरेगसा तथा रेगरेसा इस स्वरस्वरूप से सोरठ-मल्हार से भिन्न होता है। सम्प्रदाय की प्रणाली-अनुसार इसी प्रकार को धूलिया–मल्हार कहने का सद्‌गत प्रसिद्ध कीर्तनकार चन्दनजी तथा लालमजी चौबे का समर्थन लेखक को प्राप्त हुआ था। अतः यह राग देस और मल्हार से तथा सोरठ और मल्हार के मिलने से बना हुआ समझा जायेगा।

आरोह :—सा, रे, प, मपधनि, निसां।

अवरोह :—रेंनिधप, मगरेगसा, रेगरेसा।

राग धूलिया मल्हार—ताल आडा चौताल (मात्रा १४)

जहाँ तहाँ बोलत मोर सुहाये ।
सावन रमन भवन वृंदावन घोर-घोर घन आये ॥१॥
नेन्ही नेन्ही बूंदन बरखन लाग्यो ब्रजमंडलपें छाये ।
'नंददास'प्रभु संग सखा लिये कुंजन मुरली बजाये ॥२॥

स्थायी

×		२		०		३		०		४		०	
नि	—	नि	—	सां	—	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
बो	—	ल	—	त	—	मो	—	—	—	र	—	—	सु
रे	—	प	—	—	प	धनि	सां	ध	प	म	प	म	—
हा	—	ये	—	—	ज	हां	—	—	त	हां	—	—	—
रे	—	रे	ग	रे	सा	रे	—	प	—	ध	म	ग	रे
बो	—	ल	त	—	—	मो	—	—	—	र	—	—	सु
प	—	म	—	—	—	ग	रे	ग	—	नि़	—	सा	—
हा	—	ये	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×		२		०		३		०		४		०	
म	प	नि	—	नि	—	सां	—	सां	—	सां	—	नि	सां
सा	—	व	—	न	—	र	—	म	—	न	—	भ	—
रें	—	रें	गं	रें	सां	रें	—	नि	—	सां	—	सां	—
ब	—	न	—	वृं	—	दा	—	—	—	ब	—	न	—

नि	—	सां	—	रें	—	नि	ध	प	ध	म	ग	रे	सा
घो	—	र	—	घो	—	—	—	र	—	घ	—	न	—
म	रे	प	—	—	प	धनि	सां	ध	प	म	प	म	—
आ	—	ये	—	—	ज	हां—	—	—	—	त	—	हां	—

संचारी

×		२		०		३		०		४		०	
म	—	म	रे	म	—	प	—	प	—	ध	नि़	प	—
ने	—	न्ही	—	ने	—	न्ही	—	बूं	—	द	—	न	—
म	प	धनि	सां	ध	प	म	—	प	—	ध	म	ग	रे
ब	—	र—	—	ख	न	ला	—	—	—	ग्यो	—	—	—
नि़	सा	रे	—	प	प	म	ग	रे	ग	रे	ग	रे	सा
ब्र	ज	मं	—	ड	ल	पें	—	—	—	छा	—	ये	—

राग नट मल्हार

थाट काफी और वादी मध्यम, संवादी षड्ज है तथा जाति सम्पूर्ण है । राग नट और मल्हार के संयोग से यह राग उत्पन्न हुआ हैं । सम्प्रदाय में वर्षाऋतु की प्रणाली–अनुसार के समय तक यह राग गाया जाता है ।

राग नट मल्हार–ताल तिताल (मात्रा ८)

— वा पट पीत की फहरान ।
कर गहि चक्र चरनकी धावनि, नहि बिसरत वह बान ॥१॥
— रथतें उतरि अवनि आतुर व्हे कचरज की लपटान ।
मानों सिंह सैलतें उतर्यो महामत्त गज जान ॥२॥

धन्य गोपाल मेरो पन रास्यो, मेटी बेदकी कान ।
सोई अब 'सूर' सहाय हमारे, प्रगट भये हरि आन ।।३।।

स्थायी

३ × २ ० ३ × २ ०
म रे|प मप|धनि सां|धनि प|प रेंगम प|म —|रे सा
बा —|प ट|पी— —|— — त|की —|फ़— ह|रा —|— न

अन्तरा

× २ ० ३ × २ ० ३
म म|प नि|सां —|सां सां|म प|नि सां|रें नि|ध प
क र|ग हि|च —|क्र च|र न|की —|धा —|व न
रें गं|गंमं पं|गंमं रें|सांनि सां|ध नि|प म|म रे|म प
न हिं|बि— स|र— त|व— ह|बा —|— न|वा —|प ट

संचारी

× २ ० ३ × २ ० ३
म म|म मग|प प|म प|निध सां|धनि प|म प|म ग
र थ|तें ——|उ त|रि अ|व— नि|आ —|तु र|व्हे —
रे रेग|रेसा ऩिसा|गरे ग|म प|म ग|म सा|रे —|सा —
—कच|र— ज—|की— —|ल प|टा —|— ——|— —|न —

राग—जोगिया आसावयी

पुर्वांगमें जोगिया और उत्तरांगमें आसावरी से बना हुआ औडब—संपुर्ण जातिका रे ध नि कोमल स्वरका यह राग पद संग्रहोमें आसावरीके अंतर्गत प्राप्त होते है प्रायः छट्ठीके रोज पलना समय तथा जोगी लीलामें गाये जानेवाला "बाला मे जोगी जश गाया" यह पद सुना है तदनुसार दिया जा रहा है । पुरा पद वर्षोत्सव संग्रहमें देखिये ।

स्थायी (ताल–धमार, दीपचन्दी अंग)

×			२		३		०			४		५	
सां	–	–	सां	–	–	–	रें	नि	–	ध	–	प	–
मैं	–	–	जो	–	–	–	गी	–	–	ज	–	स	–
नि	–	–	ध	–	प	–	म	ग	म	प	–	–	–
गा	–	–	या	–	–	–	बा	–	–	ला	–	–	–
नि	–	–	ध	–	प	–	म	ग	–	म	–	प	–
मैं	–	–	जो	–	–	–	गी	–	–	ज	–	स	–
म	–	–	रे	–	–	–	सा	–	–	म	–	प	ध
गा	–	–	–	–	–	–	या	–	–	बा	–	ला	–

अन्तरा

×			२		३		०			४		५	
म	–	–	प	–	ध	–	सां	–	–	सां	–	–	–
ध	–	–	न्य	–	ज	–	सो	–	–	दा	–	–	–
रें	–	–	रें	–	सां	–	मं	रें	–	सां	–	–	–
ते	–	–	रे	–	या	–	त	न	–	को	–	–	–
रें	सां	–	ध	–	प	–	म	–	–	प	–	ध	–
जि	न	–	अै	–	–	–	सा	–	–	सु	–	त	–
नि	–	–	ध	–	प	–	ध	म	–	प	–	–	–
जा	–	–	या	–	–	–	बा	–	–	ला	–	–	–

अष्टछापीय भक्तिसंगीत

उद्भव और विकास

चतुर्थ खण्ड

चम्पकलाल छ. नायक